

“सच्चाई और न्याय का मार्ग कठिन जरूर होता है, लेकिन अंत में वही मार्ग सम्मान, विश्वास और सच्ची जीत तक पहुँचाता है।”

'परिवहन विशेष' का अनूठा सम्मान: कर्मयोगियों के द्वार पहुँचे संपादक संजय बाटला, देशसेवा के जब्बे को किया सलाम

वार्षिक समारोह में अनुपस्थित रहे विशिष्ट अतिथियों को घर जाकर किया सम्मानित; केंद्रीय मंत्री बी.एल. वर्मा सहित प्रशासनिक जगत की दिग्गज हस्तियों को भेंट किया सम्मान पत्र

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: पत्रकारिता के साथ-साथ सामाजिक सरोकारों को जीवंत रखते हुए 'परिवहन विशेष' समाचार पत्र ने एक नई मिसाल पेश की है। समाचार पत्र के तृतीय वार्षिक सम्मान समारोह के उपरांत, मुख्य संपादक संजय बाटला ने उन गणमान्य विभूतियों के द्वार जाकर उन्हें सम्मानित किया, जो व्यस्तता के कारण मुख्य आयोजन में शिरकत नहीं कर पाए थे।

देशहित और जनहित के कार्यों में अग्रणी रहने वाले इन अधिकारियों और जनसेवकों के सम्मान में संजय बाटला ने स्वयं उनके निवास और कार्यालय पहुंचकर उनकी सेवाओं को रेखांकित किया।

इन विशिष्ट हस्तियों का हुआ सम्मान:

श्री बी.एल. वर्मा जी: माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री, भारत सरकार।

श्री वेद प्रकाश जी: एएसपी, तिहाड़ जेल (दो बार राष्ट्रपति पदक से अलंकृत)। श्रीमती मंजू एस. कलशेन: प्रशासनिक अधिकारी, उच्च शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार। श्री भूपेंद्र सिंह: उप सचिव, जीएडी, दिल्ली सरकार।

अजूर रंधावा जी: संयुक्त निदेशक, एनडीएमसी। श्री रविंद्र कुमार पाहूजा जी: विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट, दिल्ली उच्च न्यायालय।

जब्बे को सराहना:

इस अवसर पर समाजसेविका पिंकी कुंडू जी भी उपस्थित रहीं। मुख्य संपादक ने कहा कि "राष्ट्र निर्माण में इन अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों का योगदान अतुलनीय है। "सम्मानित हस्तियों ने 'परिवहन विशेष' की इस गरिमामयी पहल को सराहना करते हुए इसे प्रेरणादायक बताया।

"सम्मान केवल मंच का मोहताज नहीं होता, वह व्यक्तित्व की गरिमा को पहचानने का नाम है।"

- संजय बाटला

"सम्मान केवल एक मंच या भव्य आयोजन का मोहताज नहीं होता, बल्कि यह उन प्रयासों की स्वीकृति है जो राष्ट्र निर्माण के लिए निस्वार्थ भाव से किए जाते हैं। हमारे ये गणमान्य अतिथि अपनी प्रशासनिक और सामाजिक व्यस्तताओं के कारण मुख्य समारोह में नहीं आ सके, लेकिन उनके द्वारा देशहित में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों का मूल्य कम नहीं हो जाता। 'परिवहन विशेष' परिवार का यह सौभाग्य है कि हमें आज इन कर्मयोगियों के द्वार पर आकर उन्हें सम्मानित करने का अवसर मिला है। राष्ट्र निर्माण में इन अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों का योगदान अतुलनीय है और हमें उम्मीद है कि इनका मार्गदर्शन हमें सदैव मिलता रहेगा।"



श्री बी.एल. वर्मा जी: माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री, भारत सरकार



श्री वेद प्रकाश जी: एएसपी, तिहाड़ जेल (दो बार राष्ट्रपति पदक से अलंकृत)



श्री भूपेंद्र सिंह: उप सचिव, जीएडी, दिल्ली सरकार।



श्री रविंद्र कुमार पाहूजा जी: विशेष न्यायिक मजिस्ट्रेट, दिल्ली उच्च न्यायालय।



श्रीमती मंजू एस. कलशेन: प्रशासनिक अधिकारी, उच्च शिक्षा विभाग, दिल्ली



अजूर रंधावा जी: संयुक्त निदेशक, एनडीएमसी।



दिल्ली परिवहन विभाग का बड़ा धमाका: अब घर के पास होंगे गाड़ी के काम, 13 क्षेत्रीय कार्यालयों में कामकाज शुरू

विकेंद्रीकरण प्रक्रिया को मिली हरी झंडी; संयुक्त आयुक्त ने जारी किए आदेश, सभी जोनल ऑफिसों में तैनात किए गए नए अधिकारी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: दिल्ली के वाहन स्वामियों और आम जनता के लिए राहत भरी खबर है। परिवहन विभाग ने प्रशासनिक सुधारों की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए दिल्ली के 13 डीटीओ (DTO) और जोनल कार्यालयों के विकेंद्रीकरण (De-centralization) की प्रक्रिया को पूरी तरह लागू कर दिया है। विभाग द्वारा 1 अप्रैल 2026 को जारी नए आदेश के अनुसार, अब दिल्ली के अलग-अलग क्षेत्रों में स्थित इन कार्यालयों में कामकाज सुचारू रूप से संचालित होगा।

जनता को मिलेगी बड़ी राहत

छिल्ले कुछ समय से प्रशासनिक बदलावों और प्रक्रियाओं के चलते जोनल कार्यालयों के कामकाज में जो सुस्ती देखी जा रही थी, उसे अब दूर कर दिया गया है। विभाग ने स्पष्ट किया है कि 13 जिला परिवहन कार्यालयों के विकेंद्रीकरण के बाद अब आरसी (RC), ड्राइविंग लाइसेंस (DL) और अन्य संबंधित कार्यों के लिए लोगों को लंबी दूरी तय नहीं करनी होगी।

तकनीकी व्यवस्थाएं होंगी दुरुस्त

संयुक्त आयुक्त (प्रशासन) डॉ. आशुतोष कुमार श्रीवास्तव ने आईटी विभाग (JC-IT) को सख्त निर्देश दिए हैं कि सभी डीटीओ कार्यालयों में इंटरनेट और लीज लाइन की सुविधा तुरंत सुनिश्चित की जाए। साथ ही, तैनात किए गए सभी अधिकारियों के डिजिटल कोड भी तत्काल प्रभाव से एक्टिव करने को कहा गया है ताकि ऑनलाइन सेवाओं में कोई बाधा न आए।

नई तैनातियाँ और फेरबदल

विभाग ने विभिन्न जोन जैसे लाडो सराय, राजा गार्डन, हारका, रोहिता और बुराडी समेत सभी प्रमुख केंद्रों पर अधिकारियों को तैनात कर दी है। डीटीओ स्तर के अधिकारियों के साथ-साथ कई अन्य अधिकारियों का भी स्थानांतरण किया गया है ताकि व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी बनाया जा सके। पुराने अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि वे अपने उत्तराधिकारियों को अवलंबी मामलों और लंबित फाइलों का प्रभार तुरंत सौंप दें।

प्रभावी क्रियान्वयन

यह आदेश सक्षम प्राधिकारी की पूर्व मंजूरी के साथ तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया गया है। इस फैसले से न केवल विभाग के कामकाज में तेजी आएगी, बल्कि भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने और सेवाओं को 'फेसलेस' व सुलभ बनाने में भी मदद मिलेगी।

GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
TRANSPORT DEPARTMENT
(ADMINISTRATION BRANCH)
59 UNDER HILL ROAD, CIVIL LINES, NEW DELHI-110054

ORDER
F.No. 499/Adm/TP/2025/1403
Dated: 01-04-2026

In pursuance of Transport Department promotion order No. F.499/Adm/TP/2025/7033 Dated 16.02.2026 and subsequent orders, the appointments regarding 13 DTO Officers /Zonal Offices issued vide order no. F.413/Adm/TP/2025/13107 dated 25.03.2026, the following Officers are deployed in District Transport Office (DTO) at the following O/o as mentioned against their names:-

S.No.	Name of the Officer	Present posting	Transferred to	City	Division	DR. Service attached
1	P.M. Rao	DTO West Zone	DTO East Zone	Delhi	North	DL-07
2	N. Sampat Singh	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
3	Sangeeta Nair	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
4	Rakul Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
5	K.C. Singh	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
6	Vijay Singh	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
7	Jyoti Singh	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
8	Deepak Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
9	Shashi Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
10	Shashi Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
11	Vikas Chhabra	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
12	Vikas Chhabra	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
13	Rahul	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
14	Shashi Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
15	Shashi Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
16	Shashi Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
17	Shashi Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
18	Shashi Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07
19	Shashi Kumar	DTO (TU)	DTO (TU)	Delhi	North	DL-07

JC (IT) is further requested to ensure the codes of DTOs are created immediately in accordance with their respective postings as mentioned above and also requested to ensure the provision for lease line internet is arranged at all the DTO Offices immediately.

Further, consequent upon above posting of DTOs the following officers are also transferred posted to the units/division as mentioned against their name:-

S.No.	Name of the Officer/Designation	Present posting	Transferred to
1	Sh. Rakesh Singh	DTO VVI Branch	Coordinating & Road Safety
2	Sh. Sakshat Singh	DTO (Major Vihar)	PCO
3	Sh. Sanjay Chhabra	DTO (VVI) (Jalandhar)	PCO/PCO (Jalandhar)
4	Sh. Jagdeep Dabas	PCO (posted at Daska zone)	PCO & Scrupping
5	Sh. Vicky Dhanraj	PCO	Licensing Branch & D-PCO/PCO
6	Sh. Prateek Kumar	PCO	BTL, BRTI and R&I Cell
7	Sh. Anshu Kumar	SEA	Evms Branch
8	Sh. Rajan Kumar	DTO (Dara Kala Khari)	Co-ordination
9	Sh. Rakul Kumar	ADOSO (Vig.) & Scrupping	ADSO and SO (Vig.)
10	Sh. Bhupinder	DTO (Dara Road)	BT Branch
11	Sh. Navneet Sangal	DTO (TU)	STA
12	Sh. Sam. Srinivasan	Temporary attach to EV from Planning Branch	Planning Branch with additional charge of EV

The predecessors DTO concerned will hand over the charge along with any other pending matters including court cases to their successors DTO.

The above orders are enforced with immediate effect.

This issues with the prior approval of Competent Authority

F.No. 499/Adm/TP/2025/1403
Copy for kind information to:-
1. Secretary to Hon'ble Minister Transport, Delhi.
2. Staff officer to secretary Chief Secretary, Delhi.
3. All District Magistrates, GNCTD.
4. PA to Secretary, Joint Commissioner, Transport Department, GNCTD.
5. PA to Special Commissioner-II, Transport Department, GNCTD.
6. PA to all Joint Commissioners, Transport Department, GNCTD.
7. Controller of Accounts/ Dy. Controller of Accounts/ Deputy Director.
8. All Dy. Commissioners /DTOs/PCOs/SOs.
9. Guard File.

टॉपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार



पिंकी कुंडू

सुरक्षित रूप से संग्रहित रहती है।
- प्रमाणीकरण पासवर्ड भेजने के बजाय वेबसाइट/ऐप से आए चैलेंज पर हस्ताक्षर करके काम करता है।

पासवर्ड की तुलना में पासकी के लाभ
- सुरक्षा: पासवर्ड फ्रिंशिंग, बूट फॉस अटैक और लोकर के प्रति संवेदनशील होते हैं। पासकी को फिश नहीं किया जा सकता और ये उल्लंघनों के प्रति प्रतिरोधी हैं।
- उपयोग: पासवर्ड याद रखने और बार-बार बदलने पड़ते हैं। पासकी बायोमेट्रिक्स (Face ID, फिंगरप्रिंट, या PIN) से सहज लॉगिन देती हैं।
- जटिल स्ट्रिंग टाइप या याद करने की जरूरत नहीं।
- संगठनों के लिए एकीकरण करें
- डेवलपर्स WebAuthn मानकों का उपयोग करके पासकी सपोर्ट जोड़ सकते हैं।
- एंटरप्राइज को ट्रान्ज़िशन अर्थात् पासकी और पासवर्ड दोनों का समर्थन करना चाहिए।

4. बैकअप और सिंक करें
- पासकी iCloud, Keychain, Google Password Manager और Microsoft Authenticator जैसी क्लाउड सेवाओं के माध्यम से उपकरणों में सिंक होती है।

सभी उपकरणों पर सहज पहुंच के लिए सिंक सक्षम करें।
जोखिम और चुनौतियाँ
- संक्रमण अवधि: सभी वेबसाइट/ऐप अभी पासकी सपोर्ट नहीं करते, इसलिए हाइब्रिड लॉगिन (पासवर्ड + पासकी) को जरूरत हो सकती है।
- डिवाइस निर्धारण: डिवाइस खोने पर क्लाउड अकाउंट या बैकअप को से रिकवरी करनी पड़ सकती है।
- उपयोगकर्ता जागरूकता: नागरिकों और अधिकारियों को स्पष्ट outreach चाहिए ताकि भ्रम न हो।
- अज्ञान विचारकों करें
- फ्रिंशिंग-प्रूफ: साइबर धोखाधड़ी का #1 कारण समाप्त।
- सुविधा: पासवर्ड भूलने या रिसेट करने की झंझट नहीं।
- भविष्य-तैयार: टेक दिग्गज पासकी को डिफॉल्ट मानक बना रहे हैं।
भारत में, जहाँ डिजिटल भुगतान और NCRP वक़्तलो तेजी से बढ़ रहे हैं, पासकी नागरिक और अधिकारी खातों को फ्रिंशिंग और क्रेडेंशियल चोरी से सुरक्षित करके धोखाधड़ी जोखिम को काफी कम कर सकती है।

"Passkeys = No Passwords, No Phishing, Just Secure Logins."
आज ही पासकी का उपयोग शुरू करें और बेहतर सुरक्षा के लिए पासवर्ड को भूल जाएं।
पासकी तेजी से पासवर्ड की जगह ले रही हैं क्योंकि वे अधिक सुरक्षित, उपयोग में आसान हैं और पहले से ही Apple, Google और Microsoft द्वारा अरबों खातों में समर्थित हैं। पासकी अपनाने का मतलब है फ्रिंशिंग जोखिम समाप्त करना, पासवर्ड थकान कम करना और सभी उपकरणों पर आसान लॉगिन सुनिश्चित करना।
पासकी क्या हैं?
- पासकी याद किए गए अक्षरों की स्ट्रिंग के बजाय पब्लिक की क्रिप्टोग्राफी का उपयोग करती हैं।
- ये आपके डिवाइस (फोन, लैपटॉप या हाईड्रैवर की) पर पासकी अपनाने के तरीके



स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी



खूबसूरती के लिए कोलेजन — शहनाज़ हुसैन



कोलेजन बैंकिंग: भविष्य के लिए बचत
कोलेजन बैंकिंग का अर्थ है इस प्रोटीन के घटने से पहले ही इसके उत्पादन को सक्रिय करना।

यह त्वचा की देखभाल की एक दीर्घकालिक रणनीति है, ताकि शरीर जब तक इसे बनाने में सक्षम है, तब तक अधिकतम कोलेजन को संरक्षित किया जा सके।

इसे एक 'बचत योजना' की तरह समझें जहाँ आप अपनी त्वचा के लचीलेपन (elasticity) में निवेश करते हैं।

कोलेजन के मुख्य प्रकार
शरीर में इसके पाँच प्रमुख प्रकार होते हैं:

टाइप I: यह सबसे प्रचुर मात्रा में होता है (हड्डियों का 90% और त्वचा का 80% हिस्सा)।

यह त्वचा, हड्डियों और टेंडन का निर्माण करता है।

टाइप II: यह उपास्थि (हड्डियों के बीच का लचीला ऊतक) बनाने में मदद करता है।

टाइप III: यह मांसपेशियों और रक्त वाहिकाओं के निर्माण में सहायक है।

टाइप IV: यह त्वचा की परतों में मदद करता है।

टाइप V: यह आँखों के कॉर्निया, बालों और प्लेसेंटा के ऊतकों में पाया जाता।

कोलेजन कम होने के कारण

कोलेजन का उत्पादन 20 से 25 साल की उम्र में चरम पर होता है, जिसके बाद इसमें हर साल 1% से 1.5% की गिरावट आने लगती है। उम्र के

अलावा इसके घटने के अन्य कारण हैं:

सूरज की रोशनी (UV किरणें): ये त्वचा में गहराई तक जाकर उन एंजाइमों को सक्रिय करती हैं जो कोलेजन को तोड़ते हैं।

धूम्रपान: यह नए कोलेजन के बनने को रोकता है और मौजूदा कोलेजन को तेजी से नष्ट करता है, जिससे त्वचा लटकने लगती है और झुर्रियाँ पड़ जाती हैं।

चीनी (Sugar): अधिक चीनी का सेवन



'ग्लाइकेशन' (Glycation) प्रक्रिया के जरिए कोलेजन को नुकसान पहुँचाता है, जिससे त्वचा का लचीलापन कम हो जाता है।

तनाव और नींद की कमी: ये भी कोलेजन के क्षरण को तेज करते हैं।

रजोनिवृत्ति (Menopause): महिलाओं में रजोनिवृत्ति के पहले 5 वर्षों में कोलेजन में 30% तक की गिरावट आती है।

कोलेजन को कैसे बचाएं?

विटामिन C: यह कोलेजन बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक है। रोजाना लगभग 250 मिलीग्राम विटामिन C का सेवन त्वचा की मजबूती बढ़ाता है। शरीर विटामिन C जमा नहीं करता, इसलिए इसे रोज लेना आवश्यक है।

कोलेजन सौंठ: अच्छे एंटी-एजिंग सौरम में कोलेजन पेप्टाइड्स, विटामिन C, रेटिनॉल और हयाल्यूरॉनिक एसिड होना चाहिए। यह सीधे कोलेजन नहीं देता, बल्कि त्वचा को अधिक



कोलेजन बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

सूरज से सुरक्षा: साल भर अच्छी गुणवत्ता वाले SPF (सनस्क्रीन) का उपयोग करें।

स्वस्थ जीवनशैली: उचित पोषण, सप्लीमेंट्स, व्यायाम और भरपूर नींद कोलेजन बैंकिंग की नींव हैं।

लेखिका अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सौंदर्य विशेषज्ञ हैं और उन्हें भारत की 'हर्बल क्वीन' कहा जाता है।

सौंठ / सूखी अदरक) आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा में एक अत्यंत उपयोगी औषधि

सौंठ (Dry Ginger Powder / सूखी अदरक) आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा में एक अत्यंत उपयोगी औषधि मानी जाती है। यह पाचन सुधारण, गैस-अपच कम करने, सर्दी-खाँसी में राहत देने तथा शरीर में सूजन कम करने में सहायक मानी जाती है। लेकिन यह समझना भी बहुत आवश्यक है कि हर प्राकृतिक औषधि हर व्यक्ति के लिए सुरक्षित नहीं होती। इसलिए कुछ विशेष रोगों या परिस्थितियों में सौंठ का सेवन डॉक्टर या आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह के बाद ही करना चाहिए।

सौंठ (Dry Ginger Powder) — सावधानी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

1. खून पतला करने वाली दवाइयों लेने वाले मरीज

जिन मरीजों को ब्लड थिनर (Blood Thinners) जैसे Aspirin, Warfarin, Clopidogrel आदि दवाएँ दी जाती हैं, उन्हें सौंठ का सेवन बहुत सावधानी से करना चाहिए।

वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार अदरक में मौजूद सक्रिय तत्व (जैसे gingerol और shogaol) रक्त के थक्के बनने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे रक्तस्राव का जोखिम बढ़ सकता है।

यदि ऐसे मरीज अधिक मात्रा में सौंठ लेते हैं तो संभावित समस्याएँ हो सकती हैं:

नाक से खून आना

मसूड़ों से खून आना

शरीर पर जल्दी-जल्दी नीले निशान पड़ना

गंभीर मामलों में आंतरिक रक्तस्राव

*इसी कारण आधुनिक चिकित्सा में सलाह दी जाती है कि ब्लड थिनर लेने वाले मरीज अदरक या सौंठ के सप्लीमेंट लेने से पहले डॉक्टर से परामर्श अवश्य करें।

2. जिन मरीजों में प्लेटलेट्स की कमी रहती हो

Platelets रक्त के थक्के बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कुछ शोधों में पाया गया है कि अदरक प्लेटलेट्स की कार्यप्रणाली को प्रभावित कर सकता है, जिससे रक्तस्राव का जोखिम बढ़ सकता है।

इसलिए जिन मरीजों में प्लेटलेट्स कम होते हैं

डेंगू या अन्य रक्तस्रावी रोग होते हैं

रक्त जमने की समस्या होती है

उन्हें सौंठ का सेवन डॉक्टर की सलाह से ही करना चाहिए।

3. पाइल्स (बवासीर), फिशर या रक्तस्राव वाली बीमारियाँ

पाइल्स और एनल फिशर में पहले से ही रक्तस्राव (Bleeding) की संभावना रहती है।

यदि ऐसे मरीज अधिक मात्रा में सौंठ लेते हैं, तो यह रक्तस्राव बढ़ा सकता है

मल त्याग के दौरान जलन या परेशानी बढ़ा सकता है

इसलिए इन रोगों में सौंठ की मात्रा चिकित्सक

द्वारा तय की जानी चाहिए।

4. रक्तचाप (Blood Pressure) के मरीज

अदरक में हल्का रक्तचाप कम करने वाला प्रभाव भी पाया गया है।

यदि कोई व्यक्ति पहले से ही BP की दवाइयों ले रहा हो

लो BP की समस्या हो

तो अधिक मात्रा में सौंठ लेने से BP बहुत कम हो सकता है

चक्कर या कमजोरी हो सकती है

इसलिए ऐसे मरीजों को भी सावधानी रखनी चाहिए।

5. आंत में अल्सर (Intestinal Ulcer) वाले मरीज

सौंठ की प्रकृति उष्ण (Hot/Heating) मानी जाती है।

अधिक मात्रा में लेने से पेट में जलन एसिडिटी

गैस्ट्रिक अल्सर की समस्या बढ़ सकती है

वैज्ञानिक स्रोतों के अनुसार अधिक मात्रा (लगभग 6 ग्राम से अधिक) अदरक लेने से गैस्ट्रो-इंटेस्टाइनल परेशानी हो सकती है।

सही मात्रा का महत्व

सामान्यतः स्वस्थ व्यक्ति के लिए अदरक या सौंठ की कुल सुरक्षित मात्रा लगभग 3-4 ग्राम प्रतिदिन मानी जाती है, लेकिन यह व्यक्ति की उम्र, स्वास्थ्य और रोग के अनुसार बदल सकती है।

इसलिए आयुर्वेद में कहा गया है कि:

“औषधि वही लाभदायक होती है जो उचित मात्रा और सही परिस्थिति में दी जाए।”

आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद का संतुलित दृष्टिकोण

आज के समय में चिकित्सा विशेषज्ञ एक महत्वपूर्ण सिद्धांत पर जोर देते हैं:

Natural (प्राकृतिक) होने का अर्थ हमेशा Safe (सुरक्षित) होना नहीं होता।

कई हर्बल पदार्थ

दवाइयों के साथ प्रतिक्रिया कर सकते हैं

दवाइयों के असर को बढ़ा या घटा सकते हैं

कुछ रोगों में जोखिम बढ़ा सकते हैं

इसीलिए अब आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद दोनों में यह सलाह दी जाती है कि कोई भी औषधि — चाहे वह प्राकृतिक ही क्यों न हो — चिकित्सकीय सलाह से ही नियमित रूप से ली जानी चाहिए।

✓ **निष्कर्ष**

सौंठ एक अत्यंत उपयोगी औषधीय पदार्थ है, लेकिन निम्न रोगों या परिस्थितियों में इसका सेवन डॉक्टर की सलाह से ही करना चाहिए:

खून पतला करने वाली दवाइयों लेने वाले मरीज

प्लेटलेट्स की कमी वाले मरीज

पाइल्स या फिशर के मरीज

रक्तचाप के मरीज

आंत में अल्सर वाले मरीज

सही मात्रा और चिकित्सकीय मार्गदर्शन के साथ ही सौंठ का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

सौंठ (Dry Ginger Powder / सूखी अदरक) आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा में एक अत्यंत उपयोगी औषधि मानी जाती है। यह पाचन सुधारण, गैस-अपच कम करने, सर्दी-खाँसी में राहत देने तथा शरीर में सूजन कम करने में सहायक मानी जाती है। लेकिन यह समझना भी बहुत आवश्यक है कि हर प्राकृतिक औषधि हर व्यक्ति के लिए सुरक्षित नहीं होती। इसलिए कुछ विशेष रोगों या परिस्थितियों में सौंठ का सेवन डॉक्टर या आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह के बाद ही करना चाहिए।

सौंठ (Dry Ginger Powder) — सावधानी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

1. खून पतला करने वाली दवाइयों लेने वाले मरीज

जिन मरीजों को ब्लड थिनर (Blood Thinners) जैसे Aspirin, Warfarin, Clopidogrel आदि दवाएँ दी जाती हैं, उन्हें सौंठ का सेवन बहुत सावधानी से करना चाहिए।

वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार अदरक में मौजूद सक्रिय तत्व (जैसे gingerol और shogaol) रक्त के थक्के बनने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकते हैं, जिससे रक्तस्राव का जोखिम बढ़ सकता है।

यदि ऐसे मरीज अधिक मात्रा में सौंठ लेते हैं तो संभावित समस्याएँ हो सकती हैं:

नाक से खून आना

मसूड़ों से खून आना

शरीर पर जल्दी-जल्दी नीले निशान पड़ना

गंभीर मामलों में आंतरिक रक्तस्राव

*इसी कारण आधुनिक चिकित्सा में सलाह दी जाती है कि ब्लड थिनर लेने वाले मरीज अदरक या सौंठ के सप्लीमेंट लेने से पहले डॉक्टर से परामर्श अवश्य करें।

2. जिन मरीजों में प्लेटलेट्स की कमी रहती हो

Platelets रक्त के थक्के बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कुछ शोधों में पाया गया है कि अदरक प्लेटलेट्स की कार्यप्रणाली को प्रभावित कर सकता है, जिससे रक्तस्राव का जोखिम बढ़ सकता है।

इसलिए जिन मरीजों में प्लेटलेट्स कम होते हैं

डेंगू या अन्य रक्तस्रावी रोग होते हैं

रक्त जमने की समस्या होती है

उन्हें सौंठ का सेवन डॉक्टर की सलाह से ही करना चाहिए।

3. पाइल्स (बवासीर), फिशर या रक्तस्राव वाली बीमारियाँ

पाइल्स और एनल फिशर में पहले से ही रक्तस्राव (Bleeding) की संभावना रहती है।

यदि ऐसे मरीज अधिक मात्रा में सौंठ लेते हैं, तो यह रक्तस्राव बढ़ा सकता है

मल त्याग के दौरान जलन या परेशानी बढ़ा सकता है

इसलिए इन रोगों में सौंठ की मात्रा चिकित्सक

द्वारा तय की जानी चाहिए।

4. रक्तचाप (Blood Pressure) के मरीज

अदरक में हल्का रक्तचाप कम करने वाला प्रभाव भी पाया गया है।

यदि कोई व्यक्ति पहले से ही BP की दवाइयों ले रहा हो

लो BP की समस्या हो

तो अधिक मात्रा में सौंठ लेने से BP बहुत कम हो सकता है

चक्कर या कमजोरी हो सकती है

इसलिए ऐसे मरीजों को भी सावधानी रखनी चाहिए।

5. आंत में अल्सर (Intestinal Ulcer) वाले मरीज

सौंठ की प्रकृति उष्ण (Hot/Heating) मानी जाती है।

अधिक मात्रा में लेने से पेट में जलन एसिडिटी

गैस्ट्रिक अल्सर की समस्या बढ़ सकती है

वैज्ञानिक स्रोतों के अनुसार अधिक मात्रा (लगभग 6 ग्राम से अधिक) अदरक लेने से गैस्ट्रो-इंटेस्टाइनल परेशानी हो सकती है।

सही मात्रा का महत्व

सामान्यतः स्वस्थ व्यक्ति के लिए अदरक या सौंठ की कुल सुरक्षित मात्रा लगभग 3-4 ग्राम प्रतिदिन मानी जाती है, लेकिन यह व्यक्ति की उम्र, स्वास्थ्य और रोग के अनुसार बदल सकती है।

इसलिए आयुर्वेद में कहा गया है कि:

“औषधि वही लाभदायक होती है जो उचित मात्रा और सही परिस्थिति में दी जाए।”

आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद का संतुलित दृष्टिकोण

आज के समय में चिकित्सा विशेषज्ञ एक महत्वपूर्ण सिद्धांत पर जोर देते हैं:

Natural (प्राकृतिक) होने का अर्थ हमेशा Safe (सुरक्षित) होना नहीं होता।

कई हर्बल पदार्थ

दवाइयों के साथ प्रतिक्रिया कर सकते हैं

दवाइयों के असर को बढ़ा या घटा सकते हैं

कुछ रोगों में जोखिम बढ़ा सकते हैं

इसीलिए अब आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद दोनों में यह सलाह दी जाती है कि कोई भी औषधि — चाहे वह प्राकृतिक ही क्यों न हो — चिकित्सकीय सलाह से ही नियमित रूप से ली जानी चाहिए।

✓ **निष्कर्ष**

सौंठ एक अत्यंत उपयोगी औषधीय पदार्थ है, लेकिन निम्न रोगों या परिस्थितियों में इसका सेवन डॉक्टर की सलाह से ही करना चाहिए:

खून पतला करने वाली दवाइयों लेने वाले मरीज

प्लेटलेट्स की कमी वाले मरीज

पाइल्स या फिशर के मरीज

रक्तचाप के मरीज

आंत में अल्सर वाले मरीज

सही मात्रा और चिकित्सकीय मार्गदर्शन के साथ ही सौंठ का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है।



द्वारा तय की जानी चाहिए।

4. रक्तचाप (Blood Pressure) के मरीज

अदरक में हल्का रक्तचाप कम करने वाला प्रभाव भी पाया गया है।

यदि कोई व्यक्ति पहले से ही BP की दवाइयों ले रहा हो

लो BP की समस्या हो

तो अधिक मात्रा में सौंठ लेने से BP बहुत कम हो सकता है

चक्कर या कमजोरी हो सकती है

इसलिए ऐसे मरीजों को भी सावधानी रखनी चाहिए।

5. आंत में अल्सर (Intestinal Ulcer) वाले मरीज

सौंठ की प्रकृति उष्ण (Hot/Heating) मानी जाती है।

अधिक मात्रा में लेने से पेट में जलन एसिडिटी

गैस्ट्रिक अल्सर की समस्या बढ़ सकती है

वैज्ञानिक स्रोतों के अनुसार अधिक मात्रा (लगभग 6 ग्राम से अधिक) अदरक लेने से गैस्ट्रो-इंटेस्टाइनल परेशानी हो सकती है।

सही मात्रा का महत्व

सामान्यतः स्वस्थ व्यक्ति के लिए अदरक या सौंठ की कुल सुरक्षित मात्रा लगभग 3-4 ग्राम प्रतिदिन मानी जाती है, लेकिन यह व्यक्ति की उम्र, स्वास्थ्य और रोग के अनुसार बदल सकती है।

इसलिए आयुर्वेद में कहा गया है कि:

“औषधि वही लाभदायक होती है जो उचित मात्रा और सही परिस्थिति में दी जाए।”

आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद का संतुलित दृष्टिकोण

आज के समय में चिकित्सा विशेषज्ञ एक महत्वपूर्ण सिद्धांत पर जोर देते हैं:

Natural (प्राकृतिक) होने का अर्थ हमेशा Safe (सुरक्षित) होना नहीं होता।

कई हर्बल पदार्थ

दवाइयों के साथ प्रतिक्रिया कर सकते हैं

दवाइयों के असर को बढ़ा या घटा सकते हैं

कुछ रोगों में जोखिम बढ़ा सकते हैं

इसीलिए अब आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद दोनों में यह सलाह दी जाती है कि कोई भी औषधि — चाहे वह प्राकृतिक ही क्यों न हो — चिकित्सकीय सलाह से ही नियमित रूप से ली जानी चाहिए।

✓ **निष्कर्ष**

सौंठ एक अत्यंत उपयोगी औषधीय पदार्थ है, लेकिन निम्न रोगों या परिस्थितियों में इसका सेवन डॉक्टर की सलाह से ही करना चाहिए:

खून पतला करने वाली दवाइयों लेने वाले मरीज

प्लेटलेट्स की कमी वाले मरीज

पाइल्स या फिशर के मरीज

रक्तचाप के मरीज

आंत में अल्सर वाले मरीज

सही मात्रा और चिकित्सकीय मार्गदर्शन के साथ ही सौंठ का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

चने और मूंगफली के संयोजन से क्या फायदा है?



चने और मूंगफली दोनों ही पौष्टिक तत्वों से भरपूर होते हैं और इनके संयोजन से कई फायदे होते हैं। चने में लाइसिन नामक एमिनो एसिड अधिक मात्रा में होता है, जबकि मूंगफली में मेथियोनिन नामक एमिनो एसिड अधिक होता है। ये दोनों ही एमिनो एसिड शरीर के लिए आवश्यक होते हैं और प्रोटीन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जब चने और मूंगफली को एक साथ खाया जाता है, तो ये दोनों एक दूसरे की कमी को पूरा करते हैं और शरीर को पूरी तरह से प्रोटीन प्रदान करते हैं। इससे शरीर को आवश्यक एमिनो एसिड मिलते हैं जो प्रोटीन के निर्माण और मांसपेशियों के विकास में मदद करते हैं।

इसके अलावा, चने और

मूंगफली दोनों में फाइबर, विटामिन और मिनरल्स भी होते हैं जो पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने और बीमारियों से बचाव में मदद करते हैं। इसलिए, चने और मूंगफली का संयोजन एक पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक विकल्प हो सकता है।

चने और मूंगफली के प्रोटीन के फायदे

चने और मूंगफली दोनों ही पौष्टिक त

सामाजिक पहुंच: स्कूल गेट से परे

शिक्षा को लंबे समय से महान समीकरण, अवसर और बेहतर जीवन का द्वार माना जाता रहा है। हम कक्षा के अंदर क्या होता है, पाठ्यक्रम मानक, परीक्षा स्कोर और शिक्षक योग्यता पर गहन ध्यान केंद्रित करते हैं। लेकिन बच्चे के विकास और भविष्य की सफलता का एक महत्वपूर्ण, अक्सर अनदेखा किया जाने वाला पहलू स्कूल के द्वार से परे है: सामाजिक पहुंच। सामाजिक पहुंच क्या है? सामाजिक पहुंच से तात्पर्य है किसी छात्र की औपचारिक शैक्षणिक वातावरण के बाहर होने वाली सामाजिक, मनोरंजक और पाठ्येतर गतिविधियों में पूर्ण रूप से भाग लेने की क्षमता। यह रिश्तों को बनाने, सॉफ्ट स्किल्स विकसित करने और रुचियों का पता लगाने के लिए नेटवर्क, संसाधन और अवसर रखने के बारे में है। जबकि स्कूल बुनियादी ज्ञान प्रदान करते हैं, सामाजिक पहुंच वह संदर्भ प्रदान करती है जिसमें उच्च ज्ञान को लागू और विस्तारित किया जाता है।



और प्रतिभाओं की खोज करना, जो आत्म-सम्मान और अपनेपन की भावना पैदा करता है। जब हम सामाजिक पहुंच को नजरअंदाज करते हैं, तो अनजाने में हमारी उपलब्धि का अंतर बढ़ जाता है। एक छात्र जो शैक्षणिक रूप से उत्कृष्ट है, लेकिन जिसके पास पेशेवर दुनिया में आगे बढ़ने के लिए सामाजिक कौशल या नेटवर्क का अभाव है, वह अपने आप को कम ग्रेड वाले लेकिन अधिक सामाजिक पूंजी वाले साथी की तुलना में नुकसानदेह पा सकता है। सामाजिक पहुंच में बाधाएं समान सामाजिक पहुंच प्राप्त करना एक जटिल चुनौती है, क्योंकि कई आपस में जुड़ी बाधाएं अक्सर रास्ते में आ जाती हैं।

शिक्षा को लंबे समय से महान समीकरण, उज्ज्वल और अधिक न्यायसंगत भविष्य का द्वार माना जाता रहा है। हम अत्याधुनिक कक्षाओं के निर्माण, पाठ्यक्रमों को अद्यतन करने तथा शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में संसाधन लगाते हैं। फिर भी, कई छात्रों के लिए सफलता की असली बाधा कक्षा के अंदर नहीं होती है - यह उसके बाहर ही रहती है। सच्ची शैक्षणिक समानता के लिए सामाजिक पहुंच, समुदाय में छात्रों की पूर्ण भागीदारी की क्षमता, संसाधन और स्कूल गेट से परे मौजूद अवसरों पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

विश्वसनीय परिवहन: यदि छात्र के पास घर पहुंचने का कोई सुरक्षित रास्ता नहीं है तो वह स्कूल के बाद ट्यूशन में भाग नहीं ले सकता, खेलकूद में भाग नहीं दे सकता, या इंटरनेट नहीं कर सकता। पोषण संबंधी सुरक्षा: शिक्षा दोपहर 3 बजे बंद नहीं होती, लेकिन कई लोगों के लिए स्वस्थ भोजन तक विश्वसनीय पहुंच समाप्त हो जाती है। भूख एकाग्रता और संज्ञानात्मक विकास का एक भयंकर प्रतिद्वंद्वी है। डिजिटल कनेक्टिविटी: ऐसी दुनिया में जहां होमवर्क, शोध और संचार ऑनलाइन हो गया है, विश्वसनीय धरेलु इंटरनेट की कमी से रहस्यमय गैप पैदा होता है जो प्रतिदिन बढ़ता जाता है। सामुदायिक मार्गदर्शन: परिवार इकाई के बाहर पेशेवर नेटवर्क, स्थानीय नेताओं और सकारात्मक रोल मॉडल तक पहुंच छात्र के विश्वदृष्टिकोण और महत्वाकांक्षा को बहुत अधिक प्रभावित करती है। जब ये तत्व यावब हो जाते हैं, तो स्कूल का द्वार उन लोगों के बीच एक कठोर सीमा बन जाता है जो अपनी शिक्षा का लाभ उठा सकते हैं और जो पीछे रह गए हैं। अंतर को पाटना: एक समग्र दृष्टिकोण स्कूल के द्वार से आगे बढ़ने के लिए, हमें अपने दृष्टिकोण को विशुद्ध रूप से शैक्षणिक मॉडल से समग्र, समुदाय-आधारित दृष्टिकोण की ओर स्थानांतरित करना होगा। सामाजिक पहुंच अंतर को पाटने के लिए स्कूलों, स्थानीय सरकारों, व्यवसायों और नागरिक संगठनों के बीच जागरूकता, सहयोग और सहकारिता को बढ़ावा देना है। सामाजिक पहुंच संसाधनों के केंद्र के रूप में कार्य करने के लिए विशिष्ट स्थिति में हैं। रसायन विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने के लिए विशिष्ट स्थिति में हैं। रसायन विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने के लिए विशिष्ट स्थिति में हैं। रसायन विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने के लिए विशिष्ट स्थिति में हैं।



संपादकीय

चिंतन-मगन

समय में खोया: भारतीय युगल के पीछे जीवानू ने पुनः कल्पना की



डॉ. विजय गर्ग

इतिहास अक्सर महान खोजों का जन्म देता है, फिर भी कभी-कभी उनके पीछे के दिमाग को भूल जाता है। यह एक भारतीय वैज्ञानिक दम्पति की कहानी है, जिनके रोजीवतन कूलिंजर पर अग्रणी कार्य ने कभी वैज्ञानिक जगत में जिज्ञासा को जगा दिया था, लेकिन धीरे-धीरे वह धुंधला हो गया। आज, नए शोध और रुचि के साथ, उनके काम पर पुनः विचार किया जा रहा है। यह न केवल अतीत की एक झलक दिखाता है, बल्कि भविष्य के लिए नई संभावनाएं भी प्रस्तुत करता है। 20वीं सदी के आरंभिक दशकों में, इस भारतीय दम्पति ने दावा किया था कि उन्होंने सुकर्म जीवन जैसी संस्थाएं बनाई हैं, जिनका नाम उन्होंने 'जीवामूर्' रखा है, जिसका अर्थ है 'जीवित कर्णों' उनके कार्य से पता चला कि कुछ परिस्थितियों में निर्जीव पदार्थों से जीवन का संश्लेषण किया जा सकता है। यह एक ऐसा विचार था जिसने उस समय की पारंपरिक वैज्ञानिक समझ को चुनौती दी थी। जबकि उनके दावों पर आक्षेप आया, उन्होंने निरसंदेह विज्ञान के सबसे गहन प्रश्नों में से एक पर बहस शुरू कर दी: जीवन क्या है और इसकी उत्पत्ति कैसे होती है? अपने शोध के साहस के बावजूद, दम्पति को स्थायी मान्यता प्राप्त करने में संघर्ष करना पड़ा।

सीमित वैज्ञानिक बुनियादी ढांचे, औपनिवेशिक युग के पूर्वाग्रह और भारतीय वैज्ञानिकों की वैश्विक दृष्टता की कमी ने उनके काम को टाल दिया। समय के साथ, उनके योगदान को काफी हद तक भुला दिया गया, तथा आधुनिक जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान में हुए विकास ने उन्हें प्रभावित कर दिया। हालांकि, विज्ञान के पास अपनी अधूरी कहानियों पर पुनर्विचार करने का एक तरीका है। हाल के अध्ययनों में आधुनिक प्रौद्योगिकी की दृष्टि से? ? ? जीवानु की अवधारणा का पुनः परीक्षण किया गया है। सिंथेटिक जीव विज्ञान, नैनो प्रौद्योगिकी और आणविक रसायन विज्ञान में प्रगति के साथ, शोधकर्ता अब यह जांच करने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं कि क्या ऐसी जीवन-सदृश संरचनाएं वास्तव में मौजूद हो सकती हैं। यद्यपि समकालीन विज्ञान इन दावों को सावधानी से देखता है, लेकिन यह भी स्वीकार करता है कि प्रारंभिक अपरंपरागत विचार अक्सर भविष्य में सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जीवानु में रुचि का पुनरुत्थान केवल एक पिछले दावे को मान्य करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह विज्ञान के इतिहास में एक खोए हुए अध्याय को बहाल करने के बारे में है। जीवानु ने यह भी दावा किया है कि नवाचार और प्रगति के रूप में, डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलौट पंजाब

कर दिया गया होगा। ऐसे योगदानों को मान्यता देने से वैश्विक वैज्ञानिक प्रगति का अधिक समावेशी और सटीक विवरण तैयार करने में मदद मिलती है। इसके अलावा, यह कहानी एक व्यापक संदेश लेकर आती है। यह वैज्ञानिक जिज्ञासा को बनाए रखने, स्वतंत्र सोच को प्रोत्साहित करने तथा विश्व भर के शोधकर्ताओं को समान अवसर प्रदान करने के महत्व पर प्रकाश डालती है। इस भूले हुए भारतीय दम्पति की यात्रा प्रेरणा और सावधानी दोनों का काम करती है। यह दर्शाती है कि कितना आसानी से मूल्यवान ज्ञान खो जा सकता है, तथा वैज्ञानिक जांच को दस्तावेजित करना और उसका समर्थन करना कितना महत्वपूर्ण है। जैसे ही जीवानु बातचीत में लौटता है, यह अतीत की कल्पना और वर्तमान अन्वेषण के बीच की खाई को पाट देता है। चाहे उनके दावे अंततः सिद्ध हो या नहीं, इस भारतीय वैज्ञानिक जोड़े का साहस और दूरदर्शिता मान्यता के योग्य है। उनकी कहानी, जो कभी समय में खो गई थी, अब पुनः कल्पना की जा रही है - न केवल एक ऐतिहासिक जिज्ञासा के रूप में, बल्कि जीवन को समझने के लिए मानवीय निरंतर खोज के प्रतीक के रूप में। डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलौट पंजाब

उज्ज्वला का उजाला या आपूर्ति का अंधेरा?

- डॉ. प्रियंका सोरभ

हालिया एलपीजी संकट ने प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना जैसी महत्वाकांक्षी कल्याणकारी पहलों की चमक धूमिल कर दी है। मार्च 2026 में पश्चिम एशिया के भू-राजनीतिक तनावों से उत्पन्न यह संकट, जब ईरान-इजरायल-अमेरिका संघर्ष ने होर्मुज जलडमरूमध्य को अवरुद्ध कर दिया, तब भारत की लगभग 60 प्रतिशत आयात निर्भरता पूरी तरह उजागर हो गई। दुनिया के सबसे बड़े एलपीजी उपभोक्ता देशों में शामिल भारत में अचानक सिलेंडरों की लंबी कतारें दिखने लगीं, ग्रामीण महिलाओं के रसोईघर ठंडे पड़ गए और व्यावसायिक गतिविधियां बुरी तरह प्रभावित हुईं। उज्ज्वला योजना ने 10 करोड़ से अधिक कनेक्शन वितरित कर स्वच्छ ईंधन क्रांति का दावा किया था, किंतु इस संकट ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल विस्तार ही प्रभावी वितरण की गारंटी नहीं होता। धरेलु उत्पादन मांग के मुकाबले अपर्याप्त रहा, भंडारण क्षमता महज पांच दिनों की साबित हुई और आपूर्ति श्रृंखला की नाजुकता खुलकर सामने आ गई।



प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना का प्रारंभ 2016 में धुंध से मुक्ति के एक आकर्षक और मानवीय स्वप्न के साथ हुआ था। लकड़ी और कोयले के चूल्हों से उत्पन्न स्वास्थ्य संकट को कम करने के उद्देश्य से गरीबी रेखा से नीचे के परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन उपलब्ध कराए गए। योजना का विस्तार तीन चरणों में हुआ—प्रथम चरण में 5 करोड़, द्वितीय में 6 करोड़ और तृतीय में अतिरिक्त लक्ष्य निर्धारित किए गए। परिणामस्वरूप एलपीजी कवरेज 95 प्रतिशत से अधिक हो गया, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। किंतु हालिया संकट ने रिफिल दरों की वास्तविकता को उजागर कर दिया। औसतन लाभार्थी प्रति वर्ष केवल 3 से 4 बार ही सिलेंडर रिफिल कराते हैं, जबकि निरंतर उपयोग के लिए कम से कम 8 से 10 रिफिल आवश्यक होते हैं। सिलेंडर की बावजूद 600 से 800 रुपये की लागत दैनिक मजदूरी पर निर्भर परिवारों के लिए भारी पड़ती है। परिणामस्वरूप, अनेक परिवार पुनः पारंपरिक ईंधनों की ओर लौट जाते हैं। सिलेंडर घरों में 'आपातकालीन विकल्प' बनकर रह जाता है, न कि नियमित उपयोग का साधन।

में भौगोलिक चुनौतियों ने स्थिति को और गंभीर बना दिया। यह स्पष्ट हो गया कि ऊर्जा सुरक्षा के बिना कल्याणकारी योजनाएं केवल कागजी उपलब्धियां बनकर रह जाती हैं। डिजिटल प्रणालियों ने पारदर्शिता तो बढ़ाई है, किंतु डिजिटल विभाजन ने बड़ी संख्या में लोगों को बाहर भी कर दिया है। ग्रामीण भारत का एक बड़ा हिस्सा अभी भी इंटरनेट और तकनीकी संसाधनों से वंचित है, जिससे रिफिल शुल्क और शिकायत निवारण जैसी प्रक्रियाएं उनके लिए कठिन बनी रहती हैं। इस प्रकार, जो व्यवस्था समावेशन के लिए बनाई गई थी, वही कई बार बहिष्करण का कारण बन जाती है।

यह समस्या केवल उज्ज्वला योजना तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत की व्यापक कल्याणकारी संरचना की कमजोरी को भी उजागर करती है। देश में अनेक योजनाएं सुभेद्य वर्गों को लक्षित करती हैं, किंतु जागरूकता के अभाव, दस्तावेजी जटिलताओं, भ्रष्टाचार और निगरानी की कमी के कारण उनका प्रभाव सीमित रह जाता है। अधिकांश योजनाएं अल्पकालिक राहत तक सीमित रहती हैं और दीर्घकालिक सशक्तीकरण पर पर्याप्त ध्यान नहीं देती। परिणामस्वरूप, भारत की कल्याणकारी योजनाएं अक्सर कागज पर 'सर्वव्यापी' और जमीन पर

“चयनात्मक” बन जाती हैं। संकट के दौरान सरकार द्वारा उठाए गए कदम तत्काल राहत के लिए आवश्यक थे, किंतु वे स्थायी समाधान प्रस्तुत नहीं करते। यदि सुभेद्य आवादी के लिए वास्तविक सुरक्षा सुनिश्चित करनी है, तो आयात निर्भरता को कम कर धरेलु उत्पादन बढ़ाना होगा, भंडारण क्षमता का विस्तार करना होगा और वितरण तंत्र को मजबूत बनाया होगा। साथ ही, डिजिटल समावेशन सुनिश्चित करते हुए वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों—जैसे बायोगैस और सौर ऊर्जा—को बढ़ावा देना होगा। अंततः, एलपीजी संकट यह स्पष्ट करता है कि कल्याण केवल वितरण का प्रश्न नहीं, बल्कि सतत और समान पहुंच सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है। उज्ज्वला योजना ने लाखों जीवनों को प्रभावित किया है, किंतु इस संकट ने उसकी सीमाओं को भी उजागर कर दिया है। सुभेद्य वर्गों का वास्तविक सशक्तीकरण तभी संभव है, जब योजनाओं की संरचना समावेशी, लचीली और उत्तरदायी हो। अन्यथा, ये पहले केवल कागजी उपलब्धियों तक सीमित रह जाएंगी। भारत की कल्याण यात्रा को अब विस्तार के साथ-साथ गहराई और स्थायित्व की आवश्यकता है, ताकि अगला संकट सबसे कमजोर वर्ग को सबसे अधिक प्रभावित न कर सके।

भगदड़ से मौतें: भारी पड़ रही मीड प्रबंधन की अनदेखी

ज्ञान चंद पाटनी

बिहार के नालंदा जिले के मधुड़ा गांव स्थित शीतला माता मंदिर में हर वर्ष की भांति श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी लेकिन यह उत्साह जल्द ही हादसे में बदल गया। ऐसे हादसे बार-बार चौख-चौख कर कहते हैं कि मीड प्रबंधन की अनदेखी जानलेवा साबित होती है। इसके बावजूद न सरकार और प्रशासन पर इसका असर होता है, न ही आयोजकों पर। इससे साफ है कि किसी को भी आम जनता की जान की परवाह नहीं है। इस बात की पुष्टि इस तथ्य से भी होती है कि राजगीर स्थित नालंदा विश्वविद्यालय में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के कार्यक्रम के लिए 2500 सुरक्षाकर्मी तैनात किए गए थे, लेकिन शीतला माता मंदिर में 25 हजार भक्तों को भगवान के भरोसे छोड़ दिया गया। भारत में भगदड़ के कारण होने वाली मौतें कभी खत्म नहीं होने वाली त्रासदी बन चुकी हैं। शीतला माता मंदिर में भगदड़ से हुई मौतों ने इस सच्चाई को फिर उजागर कर दिया है।

भारत में धार्मिक कार्यक्रमों, त्योहारों और तीर्थ स्थलों पर खास अवसरों पर बड़ी संख्या में लोग जमा होते हैं। इस तरह के आयोजनों में सुरक्षा, प्रबंधन और प्रवेश-निकास व्यवस्था के मामले में अक्सर लापरवाही बरती जाती है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) की गाइडलाइन की तरफ तो ध्यान ही नहीं दिया जाता। ऐसा हादसा कहीं भी हो, आमतौर पर मुख्य कारण मीड प्रबंधन की अनदेखी ही होता है। लोगों की सुरक्षा सरकार और आयोजकों, दोनों की जिम्मेदारी होती है। भारत में धार्मिक आयोजनों की संस्कृति ऐसी है कि ज्यादातर मामलों में आयोजक या संस्था मीड को संभालने के लिए कोई खास योजना या निगरानी व्यवस्था पर ध्यान ही नहीं देते हैं। शायद प्रशासन को अब विस्तार के साथ-साथ गहराई और स्थायित्व की आवश्यकता है, ताकि अगला संकट सबसे कमजोर वर्ग को सबसे अधिक प्रभावित न कर सके।

बिगड़ते हैं, तब सब एक-दूसरे पर दोष मढ़ते नजर आते हैं। नालंदा जिले में हुए हादसे का विवरण जिनका दर्दनाक है, उतना ही शर्मनाक भी है। आयोजकों से हजारों भक्त माता के दर्शन को आइए थे, लेकिन मंदिर प्रबंधन और प्रशासन ने कोई विशेष इंतजाम नहीं किए। छोटा गभंगुह, फिसलन भरी सीढ़ियां, अव्यवस्थित रास्ते और सबसे ऊपर दर्शन की होड़। श्रद्धालु कतार तोड़कर आगे बढ़ने को आतुर थे। पुजारी जल्दबाजी में दर्शन करा रहे थे। चोर दरवाजे से पैसे लेकर विशेष प्रवेश के आरोप भी सामने आए हैं।

देश में होने वाली करीब 80% भगदड़ के मामले धार्मिक कार्यक्रमों के दौरान सामने आते हैं। मंदिरों, दरगाहों और तीर्थ स्थलों पर भीड़ प्रबंधन की अनदेखी ही कारण है। धार्मिक ही नहीं राजनीतिक रैलियों में भी ऐसे हादसे होते रहते हैं। पिछले साल सितंबर में तमिल अभिनेता से नेता बने विजय की रैली के दौरान भगदड़ से 39 लोगों की जान चली गई थी। नेशनल क्राइम रेकार्ड ब्यूरो के अनुसार 2000 से 2022 के दौरान हुए ऐसे हादसों में 3074 लोगों की मौत हुई, जिससे हमें स्पष्ट संकेत मिलता है कि नालंदा जिले में भीड़ प्रबंधन की अनदेखी ही कारण है। धार्मिक आयोजनों की संस्कृति ऐसी है कि ज्यादातर मामलों में आयोजक या संस्था मीड को संभालने के लिए कोई खास योजना या निगरानी व्यवस्था पर ध्यान ही नहीं देते हैं। शायद प्रशासन को अब विस्तार के साथ-साथ गहराई और स्थायित्व की आवश्यकता है, ताकि अगला संकट सबसे कमजोर वर्ग को सबसे अधिक प्रभावित न कर सके।

है। इसमें राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) संहिता की पालना के साथ स्थानीय प्रशासन से समन्वय पर खास ध्यान रहे। आयोजकों की पूर्व सूचना, सुरक्षित संरचना, व्यवस्थित बैरिकेड और पुलिस-प्रशासन से समन्वय स्थापित करने के मामले में आयोजकों को खुद पहल करनी चाहिए। धर्म स्थलों के पदाधिकारी और धार्मिक संस्थाएं भीड़ नियंत्रण को लेकर अधिक जिम्मेदार होनी चाहिए। घनत्व संसर, डिजिटली सूचना प्रणाली को अपनाएं तो हादसे रोकने में कामयाबी मिल सकती है। कुछ उदाहरण भी सामने हैं। आंध्र प्रदेश के तिरुपति मंदिर में भीड़ प्रबंधन को लेकर बदलाव किया गया है। भीड़ को संभालने के लिए अब मंदिर प्रशासन एआई की मदद ले रहा है। मंदिर में अत्याधुनिक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-इटीग्रेटेड कमांड कंट्रोल सेंटर (आईसीसी) बनाया गया है। चेहरे की पहचान करने की क्षमता वाले एआई संचालित कैमरे अब श्रद्धालुओं की संख्या पर नजर रख सकते हैं। भीड़ प्रबंधन के मामले में दूसरे देशों से भी सीखा जा सकता है। अमेरिका और चीन जैसे देशों ने गंभीर हादसों के बाद अपनी नीतियों में बदलाव किया। चीन में 2014 तक भगदड़ के बड़े मामले सामने आए थे। चीन ने ऐसे मामलों को रोकने का संकल्प किया। प्रशासन ने भीड़ प्रबंधन, लाइसेंसिंग, मार्गदर्शन एवं नागरिक सुरक्षा पर खास ध्यान दिया और तकनीकी समाधान अपनाए। इसके कारण वहां ऐसी घटनाएं बहुत कम हो गईं। इसी तरह अमेरिका में 2023 के बाद भीड़ में भगदड़ से कोई बड़ी घटना नहीं हुई। पुलिस और आयोजकों के बीच बेहतर समन्वय के कारण ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने में कामयाबी मिली। साफ है कि सुरक्षा व्यवस्था और भीड़ प्रबंधन पर ध्यान दिया जाए तो भगदड़ को रोका जा सकता है।

नक्सलवाद मुक्त भारत की डेडलाइन पूरी, ख्वाब अधूरा, अब अर्बन नक्सलियों पर नजर!

कमलेश पांडेय

देश के 'पीएम इन वेंटिंग' और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नक्सलियों और आतंकवादियों की कमर तोड़ने में अभूतपूर्व और उल्लेखनीय सफलता हासिल की है लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि भारत अभी पूरी तरह नक्सलवाद और आतंकवाद मुक्त हुआ है। हां, सरकार की कोशिशें सराहनीय हैं। यदि शाह अपने नेक मकसद में कामयाब हुए तो प्रधानमंत्री पद की उनकी दावेदारी और पुख्ता हो जाएगी क्योंकि उन्होंने मनमोहाक राष्ट्रीय टीम पहले से ही बना रखी है।

यह ठीक है कि सरकार ने 31 मार्च 2026 तक नक्सलवाद को समाप्त करने का लक्ष्य रखा था और आतंकवाद समाप्त को लेकर ऐसा कोई दुरुह लक्ष्य घोषित नहीं किया गया था और कड़ी कार्रवाई गतिमान है लेकिन पूरे देश की बात छोड़ दी जाए तो खुद दिल्ली-पनसीआर से ब्रेक के बाद सामने आने वाले मामले इस बात की चुगली कर रहे हैं कि उद्देश्यपूर्ण काफी जटिल है।

ऐसा इसलिए कि नक्सलियों और आतंकवादियों को बौद्धिक और आर्थिक खुराक देने वाली जमात राजनीतिक,

सामाजिक व आर्थिक हलकों में सक्रिय हैं। प्रशासनिक गलियारों तक में इनकी जातिवादी और संप्रदायिक पैठ है। जब तक इनकी शिनाख्त और गिरफ्तारी नहीं होती, उद्देश्य अधूरा रहेगा। संभव हो कुछ तत्व सत्ताधारी दल से भी डायरेक्ट या वाया मीडिया सम्बन्धित हों।

आंकड़े बताते हैं कि छत्तीसगढ़ के कुछ जिलों में नक्सली गतिविधियाँ बनी हुई हैं। फरवरी 2026 तक नक्सल प्रभावित जिलों की संख्या घटकर 6-7 रह गई थी, मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र (बीजापुर, सुकमा, नारायणपुर) में। वहीं, मार्च 2026 के अंत में सुकमा में नक्सली मुठभेड़ हुई, जहाँ एक नक्सली मारा गया।

गृह मंत्री अमित शाह ने संसद में कहा कि नक्सलवाद लगभग समाप्त की कगार पर है, लेकिन औपचारिक घोषणा प्रक्रिया पूरी होने पर होगी। सरकारी दावा करते हुए अमित शाह ने 30 मार्च 2026 को लोकसभा में कहा कि रदेश नक्सल मुक्त हो चुका है और नक्सलवाद विलुप्त की ओर है। 31 मार्च 2026 की डेडलाइन के ठीक पहले भी ऑपरेशन चल रहे थे जिसमें सैकड़ों नक्सली मारे गए या आत्मसमर्पण कर चुके हैं। फिर भी, बस्तर जैसे क्षेत्रों में

सीमित गतिविधियाँ जारी हैं।

प्रगति के आंकड़े बताते हैं कि नक्सल प्रभावित जिले 126 (2010) से घटकर 6-7 (2026) पर पहुंच गए और ज्यादातर नक्सली मारे गए। 700+ तो हाल के वर्षों में वहीं, आत्मसमर्पण करने वाले 4,800+ नक्सली दूसरे धंधों में जुड़ चुके हैं। बहरहाल, नक्सलवाद बहुत कमजोर हो चुका है, लेकिन पूर्ण मुक्ति की घोषणा अभी बाकी है। भारत में नक्सल प्रभावित 6 जिलों की स्थिति काफी संवेदनशील बनी हुई है, जहाँ सुरक्षा बल लगातार अभियान चला रहे हैं। ये जिले मुख्यतः छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में केंद्रित हैं।

वहीं, सबसे अधिक प्रभावित जिले निम्नलिखित 6 जिले हैं, जिनके नाम छत्तीसगढ़ (बीजापुर, कांकेर/नारायणपुर, नारायणपुर, सुकमा), झारखंड (पश्चिमी सिंहभूम), और महाराष्ट्र (गढ़चिरोली) हैं। इनमें नक्सली गतिविधियाँ सीमित लेकिन सक्रिय हैं, जैसे छिपे हुए कैम्प और छोटे हमले। सुरक्षा बलों ने हाल के ऑपरेशनों से इन क्षेत्रों में घुसपैठ बढ़ाई है।

जहां तक वर्तमान अभियान की बात है तो छत्तीसगढ़ के सुकमा, बीजापुर, नारायणपुर और गरियाबंद (कभी-कभी



सूचीबद्ध) में हाई-अलर्ट सर्च ऑपरेशन चल रहे हैं। सरकार ने अंतिम बड़े अभियान की तैयारी की है, जिसमें आत्मसमर्पण और मुठभेड़ों पर जोर है। मार्च 2026 तक हिंसा में भारी कमी आई लेकिन पूर्ण नियंत्रण बाकी है। वहीं प्रगति संकेत यह है कि नक्सली संख्या घटी, सैकड़ों आत्मसमर्पण हुए। विकास परियोजनाएँ शुरू हुईं, जैसे सड़कें और स्कूल।

फिर भी, जंगलों में छिटपुट गतिविधियाँ जारी हैं। लिहाजा, 31 मार्च 2026 की डेडलाइन के बाद भी इन जिलों पर फोकस

रहेगा। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने नक्सल प्रभावित 6 जिलों (मुख्यतः छत्तीसगढ़ के बीजापुर, कांकेर/नारायणपुर, सुकमा, झारखंड का पश्चिमी सिंहभूम, महाराष्ट्र का गढ़चिरोली) को नक्सल मुक्त करने के लिए बहुआयामी रणनीति अपनाई है। यह योजना 31 मार्च 2026 तक पूर्ण मुक्ति का लक्ष्य रखती है, जिसमें सुरक्षा अभियान, आत्मसमर्पण नीति और विकास पर जोर है। सुरक्षा अभियान भी जारी है।

सुरक्षा बलों ने इन जिलों में सघन सर्च

ऑपरेशन तेज कर दिए हैं, जैसे कुरुंगुट्टाल पहाड़ मॉडल पर आधारित लंबे अभियान। नक्सलियों के सहयोगी नेटवर्क (एड नेटवर्क) को निशाना बनाया जा रहा है, साथ ही 576 मजबूत पुलिस स्टेशन और 336 नए कैम्प स्थापित किए गए। मुठभेड़ों और घेराबंदी से नक्सली कमांडरों को खत्म करने पर फोकस है।

वहीं नक्सलियों के आत्मसमर्पण और पुनर्वास पर बल दिया गया है। नक्सलियों के आत्मसमर्पण को प्रोत्साहित करने के लिए उदार नीति लागू है, जिसमें वित्तीय

सहायता, प्रशिक्षण और रोजगार दिया जाता है। हाल के वर्षों में हजारों नक्सली सरेंडर कर चुके हैं। पकड़े गए या आत्मसमर्पित नक्सलियों को मुख्यधारा में लाने के लिए कौशल विकास केंद्र खोले जा रहे हैं। विकास पहल तेज है। इन जिलों में 137 केंद्र योजनाओं का तेज वितरण, सड़कें, स्कूल, अस्पताल और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित हो रहे। एसआरई योजना के तहत क्षमता निर्माण जारी रहेगा ताकि नक्सलवाद न लौटे। 10-सूत्री योजना में वित्तीय सहायता प्रणाली तौड़ना और स्थानीय विकास शामिल है।

फिर भी अपेक्षित परिणाम की उम्मीद पूरी होनी अभी बाकी है। सरकार ने ठीक ही कहा है कि 31 मार्च 2026 के बाद 'अर्बन नक्सल' पर नजर रखी जाएगी। ये प्रयास नक्सलवाद को जड़ से समाप्त करने के करीब हैं लेकिन जंगलों में छिटपुट चुनौतियाँ बाकी हैं। रही बात आतंकवाद की तो इसे पदों के पीछे से धर्म और डिप्लोमैट बढ़ावा दे रहे हैं, इसलिए इनसे निबटने में अभी वक्त लगेगा। (युवराज फीचर्स)

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

रामचरितमानसः श्रीराम नाम का जप-तप

डॉ. नीरज भारद्वाज

भगवान श्रीराम का चरित्र हम सभी को नबविचार, नवऊर्जा और संचार से भर देता है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस का जितनी बार भी पाठ होता है, उसकी गहराई अधिक होती चली जाती है। विचार करने तो स्वयं को जानने का केवल एक ही माध्यम है और वह रामचरितमानस है। मानस में भगवान श्रीराम के चरित्र जीवन की कथा और उसका भाव अंतर्मन को निर्मल, पावन, पवित्र कर देता है। भगवान श्रीराम के नाम को लेकर गोस्वामी तुलसीदास ने कितने ही पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग कर दिया है। साहित्य की दृष्टि से देखे समझे तो हर नाम के पीछे एक कथा है। गोस्वामी जी ने लिखा भी है, राम जन्म के हेतु अनेका। परम बिचित्र एक तै एका।। अर्थात् भगवान श्रीराम जन्म के पृथ्वी पर प्रकट होने के बहुत सारे कार्य, कारण, सिद्धिर्था आदि हैं।

कई बार मन-मस्तिष्क में यह प्रश्न भी उठता है कि श्रीरामचरितमानस का विश्व भर की भाषाओं में अनुवाद हुआ है। विचार करें मानस में गोस्वामी जी ने भगवान श्रीराम के नाम को लेकर कितने ही पर्याय शब्दों प्रयोग किया है। क्या अनुवाद करते समय वह न्यायसंगत हो पाया होगा? भगवान श्रीराम को रघुर्षा, रघुपति, रघुनाथ, ब्रह्म, दीनदयाल, कृपा निधि, कृपा सिंधु, करुणा निधान आदि कितने ही शब्दों का प्रयोग किया गया है। जहां गोस्वामी जी को जितना सुंदर भाव लगा, वहां वही शब्द प्रयोग कर दिया। हमारे संत, महात्मा, साधु, ज्ञानी आदि इनकी जितनी भी व्याख्या करते हैं उतनी ही कम लगती है। भगवान श्रीराम के नाम का जप और कीर्तन अलग-अलग भक्ति भाव के साथ होता रहता है। श्रीराम नाम का गुणगान जितना किया जाए उतना ही कम लगता है।

श्रीराम जब भी मन-मस्तिष्क में आते हैं, वह एक नया विषय और शब्द चेतना दे देते हैं। मन उन्हीं में रम जाता है। कलम स्वयं लिखने लगती है, भाव आस-पास तैरने लगते हैं। मन भक्ति रस में डूब जाता है, तन पुलकित हो जाता है। शब्द ब्रह्म बनकर कागज पर उतर आते हैं। आंखों का जल शब्दों को निहारता रहता है। भक्ति भाव अंतर्मन की गहराई में जाकर स्वच्छता का बीजांकुरित करता है। मन का मूल कटने लगता है। आप स्वयं में होते हुए भी स्वयं से दूर नजर आते हैं। व्यक्ति बैठे कहीं है और पहुंच कहीं और जाता है। मन की यात्रा प्रभु के चरणों में लग जाती है। श्रीराम नाम का जप, तप और कीर्तन इहलोक और परलोक दोनों को पार करने वाला है। श्रीराम को जिसने भी गाया, पढ़ा, सुना, लिखा आदि उन सभी ने प्रभु को कहीं ना कहीं पाया है। वह स्वयं राममय हो गए हैं, सियराम में सब जग जानी हर स्थान पर प्रभु ही दिखाई देते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में भगवान श्रीराम के स्वरूप, गुणों और लीलाओं के अनुसार सुंदर पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया



है। रघुपति, रघुर्षा, रघुनाथ, रघुबरये शब्द केवल नाम नहीं हैं, बल्कि श्रीराम के विराट व्यक्तित्व के अलग-अलग पहलुओं को दर्शाते हैं। रघुपति चरण सरोज सहरह। करि मुनि मुनि संजु मुकुट मनि सोह। रकहने का भाव है कि रघुकुल के स्वामी श्रीराम के चरण कमल भक्तों के हृदय में खिलने वाले हैं। बालकांड में गोस्वामी जी लिखते हैं कि, रघुरु गृह गए पढ़न रघुर्षा, अल्पकाल विद्या सब आईर। इसका अर्थ है कि श्रीराम ने गुरु के आश्रम में रहकर बहुत ही कम समय में संपूर्ण विद्या प्राप्त कर ली, जो एकाग्रता और विमर्शता का प्रतीक है। बालकाण्ड में गोस्वामी जी लिखते हैं कि, रघुमिरो सो नाम राम गुन गाथा। करउँ नाइ रघुनाथहि माथार। सुंदरकाण्ड में लिखते हैं कि रयह कहि नाइ सबन्हि कहूँ माथा। चलेउ हरषि हिउँ धरि रघुनाथार। उक्तकाण्ड में एक बार रघुनाथ बोलाए। गुर द्विज पुरवासी सब आएर। अयोध्याकाण्ड में रघुवर शब्द भी मिलता है, रबरनउँ रघुवर बिमल जसु जो दायकु फल चारि।

भगवान श्रीराम को रामचरितमानस में पग-पग पर 'कृपा सिंधु' (कृपा के सागर) और 'कृपा निधि' (कृपा के भंडार) जैसे विशेषणों से पुकारा गया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इन शब्दों के माध्यम से उनके दयालु स्वभाव को दिखाया, बलाया, समझाया है कृपा सिंधु (कृपा के सागर) जैसे सागर की कोई सीमा नहीं होती, वैसे ही प्रभु श्रीराम की कृपा भी असीम और अनंत है। जब भगवान श्रीराम वनवास के समय निषादराज गृह से मिलते हैं या भक्तों पर दया करते हैं, तब इस शब्द का प्रयोग मिलता है। बालकांड में गोस्वामी जी लिखते हैं कि रबिहसि रामु तब कहि मृदु बानी। अनुजिह समझावहु बरजानी। अस कहि कृपा सिंधु रघुर्षा। गयउ जहाँ मुनि बसत सुहाई।। एक उदाहरण और लिया जा सकता है-

गो द्विज धेनु देव हितकारी। कृपा सिंधु मानुष तनुधारी।।

कृपा निधि (कृपा के भंडार) यह शब्द प्रार्थना और विनय के प्रसंगों में आता है। कृपानिधि का अर्थ होता है 'खजाना'। श्रीराम जी कृपा के ऐसे खजाने हैं, जो कभी खाली नहीं होता। श्रीराम नाम का जप हमेशा बढ़ता रहता है। सुंदरकांड में गोस्वामी जी लिखते हैं कि, रसुनि प्रभु बचन हरषि हनुमाना। अंतर्यामी प्रभु सब जाना। तब बोलेउ करि जोरि पनारी। सुनहु देव सचराचर धारी।। प्रभु अचरज कछु नाहि बिसेषी। मो पर कृपा निधि कीन्ही देखी।। रमानस के उत्तरकांड में काकभुशुण्डि जी भी प्रभु को इन नामों से पुकारते हैं, रसुनु खगपति अस समुद्रि प्रसंसा। करहिं सदा मुनि मनस उतंशा।। अस मानस जैहि बिनु अवगाहे। नहिं छूटहिं भव जाल बिगाहे।। एहि बिधि राम कृपा निधि गाई। कहि निज कथा रामु मन लाई।।

'करुना निधान' (करुणा के घर या भंडार) शब्द का प्रयोग गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्रभु श्रीराम की असीम दयालुता को दर्शाने के लिए कई स्थानों पर किया है। 'कहा करुना निधान रघुर्षा। भरत सुभाउ को कहै बनाई।। रसुंदरकांड में गोस्वामी जी लिखते हैं- रराम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुना निधान की।। यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ह राम तुह कहैं सहिदानी।। दीनदयाल शब्द का भी प्रयोग किया है। भगवान के जन्म के समय गोस्वामी जी की चौपाई प्रासंगिक है। रभय प्रगत कृपाला दीनदयाला कोसल्य हितकारी।। हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।। रइ सुदृष्टि से भगवान श्रीराम के अनेक नामों और विशेषणों का प्रयोग हमें श्रीरामचरितमानस में दिखाई दे जाता है। हमें उसकी गहराई में उतरने की जरूरत है। (युवराज फीचर्स)

बालाजी

बालाजी

बालाजी ने सियाराम जी के पूर्ण किए सारे काम, महामंत्र थे गाया श्रीराम जय राम जय राजा राम।

समुद्र लोचकर माता सीता का अकेले पता लगाया, अशोक वाटिका उजाड़ राक्षसों को खूब ही सताया, मेघदूत करे है कंदन ब्रह्मरश्म से फिर किया बंधन, प्रभु इच्छा जान कर नमन बंधक बन चले हनुमान, पवनपुत्र करें गान श्रीराम जय राम जय राजा राम।

लंकापति राजा रावण को क्रोध रामदूत पर आया, पूँछ में लगा दी आग कपिराज ने लंका को जलाया, पयोधि ने बचाए प्राण दूर किया जाला का त्राण, चूड़ामणि पहचान सीया आज्ञा लेकर चले हनुमान, सीता जी ने गाया श्रीराम जय राम जय राजा राम।

श्रीराम नाम संकीर्तन से रआनंदर सेना में जगाया, महाबली ने वानर सेना संग असुरों को मार गिराया, इंद्रजीत ने छोड़ा बाण कष्टकारी हुआ विधि का विधान, संकट में लक्ष्मण प्राण संजीवनी बूटी लाने चले हनुमान, जामवंत ने गाया श्रीराम जय राम जय राजा राम।

श्रीराम जी ने केशरी नंदन को प्रेम से लगे लगाया, दशानन रावण को फिर घनघोर युद्ध में मार गिराया, चूर किया दुष्ट का अभिमान बढ़ाई अवध की शान, सीता को दिया सम्मान अवधपुरी संग चले हनुमान, विभीषण ने गाया श्रीराम जय राम जय राजा राम।

बालाजी ने सियाराम जी के पूर्ण किए सारे काम, महामंत्र थे गाया श्रीराम जय राम जय राजा राम।
- मोनिका डामा "आनंद"

नक्सलवाद का अंत, रेड कॉरिडोर का सपना चकनाचूर- क्या अब भ्रष्टाचार व नशा मुक्ति के अंत की अगली ऐतिहासिक डेडलाइन का समय आ गया है? - भारतीय जनता के हर वर्ग की अपेक्षा -समग्र विश्लेषण

जब तक समाज में जुगाड़ और काम निकालने की मानसिकता बनी रहेगी, तब तक भ्रष्टाचार पूरी तरह समाप्त नहीं हो सकता? नक्सलवाद के खिलाफ जैसे जीरो टॉलरेंस नीति अपनाई गई, वैसे ही भ्रष्टाचार व नशाखोरी के खिलाफ भी एक सख्त और समर्थक रणनीति बनाई जाने की खास जरूरत है -एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तर पर भारत के समकालीन राजनीतिक और प्रशासनिक विमर्श में एक बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। दशकों तक देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ी चुनौती रहे नक्सलवाद के लगभग अंत की घोषणा के साथ अब राष्ट्रीय एजेंडा एक नए लक्ष्य की ओर बढ़ता दिखाई दे रहा है, भ्रष्टाचार मुक्त भारत। यह केवल एक नारा या राजनीतिक संकल्प नहीं, बल्कि शासन-प्रणाली, विकास मॉडल और लोकतांत्रिक विश्वसनीयता की परीक्षा है। जिस प्रकार नक्सल मुक्त भारत के लिए एक निश्चित समय-सीमा निर्धारित कर व्यापक रणनीति के साथ कार्य किया गया, उसी प्रकार अब यह प्रश्न उठ रहा है कि क्या भ्रष्टाचार के खिलाफ भी एक ठोस डेडलाइन तय की जा सकती है? एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र बताते हैं-

'करुना निधान' (करुणा के घर या भंडार) शब्द का प्रयोग गोस्वामी तुलसीदास जी ने प्रभु श्रीराम की असीम दयालुता को दर्शाने के लिए कई स्थानों पर किया है। 'कहा करुना निधान रघुर्षा। भरत सुभाउ को कहै बनाई।। रसुंदरकांड में गोस्वामी जी लिखते हैं- रराम दूत मैं मातु जानकी। सत्य सपथ करुना निधान की।। यह मुद्रिका मातु मैं आनी। दीन्ह राम तुह कहैं सहिदानी।। दीनदयाल शब्द का भी प्रयोग किया है। भगवान के जन्म के समय गोस्वामी जी की चौपाई प्रासंगिक है। रभय प्रगत कृपाला दीनदयाला कोसल्य हितकारी।। हर्षित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी।। रइ सुदृष्टि से भगवान श्रीराम के अनेक नामों और विशेषणों का प्रयोग हमें श्रीरामचरितमानस में दिखाई दे जाता है। हमें उसकी गहराई में उतरने की जरूरत है। (युवराज फीचर्स)



लिए स्पष्ट समय-सीमा तय की जाए और उसमें देरी करने वाले अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।

साथियों बात अगर हम भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई केवल कानून और दंड तक सीमित नहीं हो सकती इसको समझने की करें तो, इसके लिए एक व्यापक संस्थागत ढांचे की आवश्यकता है, जिसमें पारदर्शिता, जवाबदेही और नागरिक भागीदारी को प्राथमिकता दी जाए। शिकायतकर्ताओं को सुरक्षा और त्वरित न्याय का भरोसा देना भी इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अक्सर देखा गया है कि भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने का माध्यम था, लेकिन समय के साथ यह देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा बन गया। करीब छह दशकों तक चले इस संघर्ष में हजारों लोगों की जान गई, जिनमें सुरक्षा बलों के जवान और आम नागरिक दोनों शामिल थे। लेकिन 2024 में एक निर्णायक मोड़ आया, जब देश के गृह मंत्री ने नक्सलवाद के अंत के लिए 31 मार्च 2026 की डेडलाइन तय की। इसके बाद सुरक्षा बलों, खुफिया एजेंसियों और राज्य सरकारों के समन्वित प्रयासों ने रेड कॉरिडोर के विस्तार को तेजी से सीमित कर दिया। छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में बड़े पैमाने पर ऑपरेशन चलाए गए, नक्सली नेतृत्व को कमजोर किया गया और हजारों कैदरों ने आत्मसमर्पण किया। बस्तर जैसे क्षेत्र, जो कभी नक्सल गतिविधियों के गढ़ माने जाते थे, वहाँ अब स्कूल, सड़कें और राशन की दुकानें खुलने लगी हैं। यह परिवर्तन केवल सुरक्षा की दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास के संकेत के रूप में भी महत्वपूर्ण है। हालांकि, इस उपलब्धि पर राजनीतिक मतभेद भी सामने आए हैं। जहाँ एक ओर सरकार इसे ऐतिहासिक सफलता के रूप में प्रस्तुत कर रही है, वहीं विपक्ष ने इस दावे पर सवाल उठाए हैं। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा इस मुद्दे पर बहस की चुनौती यह दर्शाती है कि नक्सलवाद का पूर्ण अंत अभी भी एक बहस का

नक्सलवाद के खिलाफ सफलता ने यह विश्वास पैदा किया है कि यदि सरकार दान ले, तो बड़ी से बड़ी चुनौती का समाधान संभव है। यही विश्वास अब भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में भी दिखाई दे रहा है। साथियों बात अगर हम नक्सलवाद समाप्त टारगेट 31 मार्च 2026 की करें तो भारत में नक्सलवाद का इतिहास 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलवादी गांव से शुरू हुआ, जब एक छोटे किसान आंदोलन ने हिंसक विद्रोह का रूप ले लिया। प्रारंभ में यह आंदोलन सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के खिलाफ आवाज उठाने का माध्यम था, लेकिन समय के साथ यह देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक गंभीर खतरा बन गया। करीब छह दशकों तक चले इस संघर्ष में हजारों लोगों की जान गई, जिनमें सुरक्षा बलों के जवान और आम नागरिक दोनों शामिल थे। लेकिन 2024 में एक निर्णायक मोड़ आया, जब देश के गृह मंत्री ने नक्सलवाद के अंत के लिए 31 मार्च 2026 की डेडलाइन तय की। इसके बाद सुरक्षा बलों, खुफिया एजेंसियों और राज्य सरकारों के समन्वित प्रयासों ने रेड कॉरिडोर के विस्तार को तेजी से सीमित कर दिया। छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में बड़े पैमाने पर ऑपरेशन चलाए गए, नक्सली नेतृत्व को कमजोर किया गया और हजारों कैदरों ने आत्मसमर्पण किया। बस्तर जैसे क्षेत्र, जो कभी नक्सल गतिविधियों के गढ़ माने जाते थे, वहाँ अब स्कूल, सड़कें और राशन की दुकानें खुलने लगी हैं। यह परिवर्तन केवल सुरक्षा की दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास के संकेत के रूप में भी महत्वपूर्ण है। हालांकि, इस उपलब्धि पर राजनीतिक मतभेद भी सामने आए हैं। जहाँ एक ओर सरकार इसे ऐतिहासिक सफलता के रूप में प्रस्तुत कर रही है, वहीं विपक्ष ने इस दावे पर सवाल उठाए हैं। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा इस मुद्दे पर बहस की चुनौती यह दर्शाती है कि नक्सलवाद का पूर्ण अंत अभी भी एक बहस का

विषय है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि नक्सलवाद का प्रभाव पहले की तुलना में काफी कम हुआ है और देश ने इस दिशा में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। साथियों बात अगर हम नक्सलवाद और भ्रष्टाचार के बीच एक महत्वपूर्ण समानता को समझने की करें तो वह यह है कि दोनों ही विकास और सुशासन के लिए बाधक हैं। जहाँ नक्सलवाद ने देश के कुछ हिस्सों को विकास की मुख्यधारा से अलग कर दिया, वहीं भ्रष्टाचार ने पूरे देश में संसाधनों के न्यायसंगत वितरण को प्रभावित किया। इसलिए यदि नक्सलवाद के अंत को एक नई आजादी के रूप में देखा जा रहा है, तो भ्रष्टाचार से मुक्ति को वास्तविक आजादी की दिशा में अगला कदम माना जा सकता है। अब सवाल यह है कि क्या भ्रष्टाचार के खिलाफ भी एक निश्चित डेडलाइन तय की जा सकती है? यह एक जटिल प्रश्न है, क्योंकि नक्सलवाद की तरह यह एक स्पष्ट और सीमित क्षेत्र में फैली व्यवस्था के हर स्तर पर मौजूद है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि इसके खिलाफ ठोस और समयबद्ध कार्रवाई संभव नहीं है। यदि स्पष्ट लक्ष्यों, मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रभावी कार्यान्वयन के साथ एक रणनीति बनाई जाए, तो निश्चित रूप से इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति की जा सकती है। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि नक्सल मुक्त भारत से भ्रष्टाचार मुक्त भारत की यात्रा केवल एक नीतिगत बदलाव नहीं, बल्कि एक व्यापक राष्ट्रीय परिवर्तन का संकेत है। यह यात्रा आसान नहीं होगी, लेकिन यह इच्छा है सही दिशा और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ाया जाए, तो यह भारत को एक नए युग में प्रवेश कराने का माध्यम बन सकता है एक ऐसा युग जहाँ विकास समावेशी हो, शासन पारदर्शी हो और नागरिकों का विश्वास अटूट हो।

झारखंड के कोयलांचल में जमीन के अंदर घंसा घर तीन समा गये पाताल

जनप्रतिनिधियों लगाया अवैध कोयला उत्खनन का आरोप, पुलिस की संरक्षण से होती है चोरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची, झारखंड के धनबाद जिले में बड़ी और दर्दनाम घटना सामने आई है। जहां जमीन फटने से एक घर पूरी तरह जमींदोज हो गया और तीन लोग उसमें समा गए। घटना धनबाद के सोनारडीह थाना क्षेत्र के टांडाबारी बस्ती की है, जहां मंगलवार, 31 मार्च की शाम के वक्त जोरदार आवाज के जमीन फटी और घर सहित सभी लोग जमींदोज हो गए। इस घटना में तीन लोगों की मौत हो गई, जिन्हें घंटों कड़ी मशक्कत के बाद रेस्क्यू कर बाहर निकाला गया। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने दहशत का माहौल है। इधर घटना से गुस्साए लोग सड़क पर उतर आए और जमकर हंगामा किया। लोगों ने कतरास बोकारो मार्ग को बाधित कर दिया। लोगों का आरोप है कि स्थानीय प्रशासन की मिलीभगत से यहां अवैध कोयला उत्खनन कराया जाता है। जिस कारण यहां की जमीन खोखली हो गई है।

लोगों के आक्रोश को देखते हुए प्रशासन और बीसीसीएल प्रबंधन की टीम हरकत में आई। जिसके बाद राहत और बचाव कार्य शुरू किया गया। बीसीसीएल की रेस्क्यू टीम घटना स्थल पर रात के 9 बजे पहुंच गई थी। लेकिन



अंधेरा होने और घटना स्थल के पास बड़ी बड़ी दरारें रेस्क्यू टीम के लिए बड़ी चुनौती थीं। आखिरकार देर रात लगभग 11 बजे राहत बचाव कार्य शुरू किया गया और लगभग 4 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद रेस्क्यू की टीम ने तीनों लोगों को मृत अवस्था में मलबे से बाहर निकाला। अहले सुबह तीन बजे शवों के निकलते ही मौके पर चौख पुकार मच गई। कुछ लोग

शव को ले जाने नहीं देना चाह रहे थे। लेकिन काफी जद्दोजहद के बाद पुलिस प्रशासन ने शवों को एंबुलेंस से एसएनएमएमसीएच अस्पताल धनबाद भेज दिया। बाधामारा विधायक शत्रुघ्न महतो और स्थानीय मुखिया भी मौके पर पहुंचे। विधायक शत्रुघ्न महतो ने बताया कि क्षेत्र में अवैध कोयला उत्खनन के कारण पूरा जमीन खोखला हो गया है जिस कारण यह

घटना हुई। उन्होंने बताया कि मौके पर हालात हैं उससे लोगों में डर है। स्थानीय मुखिया ने भी इस घटना के लिए पुलिस प्रशासन को दोषी ठहराते हुए कहा कि पुलिस इस क्षेत्र में कोयला चोरों के मिली हुई है। यहां लगातार अवैध कोयला उत्खनन होता है। जिस कारण आज इतनी बड़ी घटना हुई और घर सहित तीन लोग जमीन में समा गये।

12 वर्ष की बच्ची के बलात्कार कांड को लेकर भाजपा का 3 अप्रैल को झारखंड बंद

आज शाम राज्य भर में मशाल जुलूस, राज्यसभा सांसद ने महिला आयोग लिखा पत्र कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड



रांची, झारखंड के हजारीबाग में 12 साल की बच्ची के साथ हुए दुष्कर्म और हत्या के मामले ने तुल पकड़ लिया है। इस घटना के विरोध में भाजपा ने 3 अप्रैल को झारखंड बंद का ऐलान किया है। भाजपा 2 अप्रैल को सभी ब्लॉक और जिला मुख्यालयों में मशाल जुलूस निकालेगी। भाजपा ने हेमंत सरकार पर जोरदार हमला बोलते हुए सूबे की कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। बीजेपी ने कहा कि हेमंत सोरेन सरकार सरकार अपराध रोकने में पूरी तरह विफल रही है। वहीं झारखंड हाईकोर्ट ने मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए प्रशासन को नोटिस जारी किया है।

रांची स्थित भाजपा प्रदेश मुख्यालय में पत्रकारों से बात करते हुए पार्टी प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने हजारीबाग जिले में 12 साल की बच्ची के साथ हुए दुष्कर्म और हत्या के मामले में न्याय की मांग की। उन्होंने इंसाफ की मांग करते हुए तीन अप्रैल को झारखंड बंद का आह्वान किया।

उन्होंने बंद के लिए समर्थन जुटाने के लिए दो अप्रैल को सभी ब्लॉक और जिला मुख्यालयों में मशाल जुलूस निकालने की भी घोषणा की।

रांची में भाजपा के प्रदेश मुख्यालय में पत्रकारों से बातचीत करते हुए पार्टी प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने दावा किया कि झारखंड में कानून और व्यवस्था की स्थिति पूरी तरह से चरमरा गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि 2020 से जनवरी 2026 के बीच राज्य में दुष्कर्म के 10,113 मामले, अपहरण के 11,003 मामले, चोरी के 60 हजार से अधिक मामले और हत्या के 9,213 मामले दर्ज किए गए हैं। प्रतुल शाहदेव ने दावा किया कि प्रदेश भाजपा अध्यक्ष आदित्य साहू द्वारा मुद्दा उठाने के बाद ही पुलिस ने हजारीबाग मामले की जांच तेज की।

उन्होंने कहा कि वे दोषियों की पहचान और सजा की मांग कर रहे हैं। तीन अप्रैल का झारखंड बंद ऐतिहासिक होगा। गौर करने वाली बात यह भी कि झारखंड हाईकोर्ट ने सोमवार को इस घटना का स्वतः संज्ञान लेकर राज्य प्रशासन और पुलिस महानिदेशक को नोटिस जारी किया है।

परिवार की ओर से पुलिस में दी गई प्रार्थमिकी के अनुसार, बच्ची 24 मार्च की रात को अपनी मां के साथ राम नवमी की मंगला शोभायात्रा देखने गई थी। इसी दौरान उसे कथित तौर पर किडनैप कर लिया गया। उसके परिवार ने बच्ची को रात भर तलाशा लेकिन अगले दिन खेत से उसकी लाश बरामद की गई। मामले की जांच के लिए 3 सदस्यीय एसआईटी का गठन किया गया है।

सीरवी करियर काउंसलिंग सेशन 5 अप्रैल को

हैदराबाद/सिकंदराबाद। पारसीगुटा स्थित सीरवी समाज मंदिर (बडेर) में सीरवी फ्रेंड्स क्लब हैदराबाद के तत्वाधान में 5 अप्रैल को एक भव्य करियर काउंसलिंग सेशन का आयोजन किया जाएगा। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवी विशेषज्ञ, अधिकारी एवं प्रोफेशनल्स विद्यार्थियों और युवाओं को उनके करियर संबंधी मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। कार्यक्रम के दौरान सिविल सर्विसेज (IAS, IPS), चार्टर्ड अकाउंटेंसी (CA), वकालत, मेडिकल एवं आयुर्वेद, आर्किटेक्चर, इंटीरियर डिजाइनिंग, पायलट, इंडियन आर्मी (केप्टन, मेजर), इंजीनियरिंग (डीआरडीओ) तथा खेलकूद जैसे अनेक क्षेत्रों से जुड़े विशेषज्ञ अपने अनुभव साझा करेंगे और छात्रों के सवालों के जवाब देंगे। इस सेशन का उद्देश्य युवाओं को सही करियर विकल्प चुनने में सहायता करना, उनके मन में उत्पन्न शंकाओं का समाधान करना तथा उन्हें अपने लक्ष्य के प्रति प्रेरित करना है। कार्यक्रम में समाज के गणमान्य नागरिक एवं समाज बंधु भी उपस्थित रहेंगे, जिससे यह आयोजन और भी प्रेरणादायक बनेगा। सीरवी फ्रेंड्स क्लब हैदराबाद ने सभी विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं युवाओं से अपील की है कि वे अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाएं और अपने उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक मजबूत कदम बढ़ाएं।

रूस भारत के लिए एक बार फिर मददगार साबित

सौरभ वाण्य

जब-जब भारत को जरूरत पड़ी, तब तब रूस ने अपना मित्रता धर्म निभाया है। वैश्विक राजनीति के जटिल दौर में, जब विश्व शक्तियों के बीच तनाव और प्रतिस्पर्धा चरम पर है, ऐसे समय में भारत के लिए रूस का एक बार फिर भरोसेमंद साझेदार के रूप में सामने आना बेहद महत्वपूर्ण है। यह केवल कूटनीतिक संबंधों का मामला नहीं, बल्कि रणनीतिक, आर्थिक और ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ा एक व्यापक सहयोग है। ऐसे समय में जब पूरी दुनिया गैस कच्चे तेल की कमी से त्रस्त है तब 9 मार्च तक भारत का रूसी तेल आयात 5.55 करोड़ बैरल तक पहुंच गया है जो कि खरीद नौ महीने में सबसे अधिक है। भारत की तेल खरीद में अंगोला भी पिक्वर में आया है। उसकी सप्लाई में 255 फीसदी का भारी इजाजत हुआ है। भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा तेल आयातक है। उसके कच्चे तेल के आयात का लगभग 40-50 फीसदी हिस्सा होर्मुज स्ट्रेट से होकर गुजरता है। सऊदी अरब से होने वाले आयात में फरवरी के मुकाबले 38 फीसदी की कमी आई। वहीं दूसरी ओर अंगोला से होने वाली खरीद में महीने-दर-महीने के आधारे पर जनरल स्ट्रेट 255 फीसदी की बढ़ोतरी हुई। यह अपने अब तक के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गया। भारत की ओर से इराक से की जाने वाली खरीद में भी 73 फीसदी की कमी आई। यह घटक 73 लाख बैरल रह गई। इसी तरह संयुक्त अरब अमीरात से होने वाली खरीद में भी 59

फीसदी की कमी आई। यह 64 लाख बैरल पर पहुंच गई। भारत और रूस के संबंध दशकों पुराने हैं, जो समय-समय पर परखे गए और हर बार मजबूत होकर उभरे। शीत युद्ध के दौर से लेकर आज के बहुध्रुवीय विश्व तक, रूस ने कई अहम मौकों पर भारत का साथ दिया है। आज जब पश्चिमी देशों और रूस के बीच टकराव बढ़ा है, तब भारत ने संतुलित विदेश नीति अपनाते हुए अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दी है।

ऊर्जा के क्षेत्र में रूस की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। वैश्विक बाजार में तेल और गैस की कीमतों में अस्थिरता के बीच रूस ने भारत को रियायती दरों पर कच्चा तेल उपलब्ध कराया, जिससे देश की अर्थव्यवस्था को स्थिरता मिली और आम जनता पर महंगाई का बोझ कुछ हद तक कम हुआ। यह सहयोग भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए एक मजबूत आधार बनकर उभरा है।

रक्षा क्षेत्र में भी रूस भारत का प्रमुख सहयोगी रहा है। आधुनिक हथियारों, तकनीकी हस्तांतरण और संयुक्त उत्पादन के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच गहरा सहयोग है। चाहे वह ब्रह्मोस मिसाइल परियोजना हो या एस-400 वायु रक्षा प्रणाली, रूस ने भारत की सैन्य क्षमता को सुदृढ़ करने में अहम योगदान दिया है।

हालांकि, इस संबंध में चुनौतियां भी कम नहीं हैं। रूस पर पश्चिमी प्रतिबंधों के चलते भुगतान तंत्र, आपूर्ति श्रृंखला और अंतरराष्ट्रीय दबाव जैसे मुद्दे सामने आए हैं।

इसके बावजूद भारत ने अपने रणनीतिक हितों को ध्यान में रखते हुए रूस के साथ सहयोग जारी रखा है।

आज जरूरत इस बात की है कि भारत और रूस अपने संबंधों को और अधिक विविध और आधुनिक बनाएं। केवल रक्षा और ऊर्जा तक सीमित न रहकर, विज्ञान, तकनीक, अंतरिक्ष और व्यापार के नए क्षेत्रों में भी सहयोग बढ़ाया जाना चाहिए। इससे दोनों देशों के संबंध और अधिक मजबूत और टिकाऊ बन सकते हैं। यह कहा जा सकता है कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में रूस का भारत के लिए मददगार बनकर उभरना न केवल द्विपक्षीय संबंधों की मजबूती का संकेत है, बल्कि यह भारत की स्वतंत्र और संतुलित विदेश नीति की सफलता का भी प्रमाण है।

भारत-रूस मित्रता बहुत पुरानी भारत और रूस के बीच संबंध केवल कूटनीतिक नहीं, बल्कि ऐतिहासिक विश्वास, रणनीतिक सहयोग और परस्पर सम्मान पर आधारित हैं। यह मित्रता दशकों पुरानी है और बदलते वैश्विक परिदृश्य के बावजूद निरंतर मजबूत होती रही है।

शीत युद्ध के दौर में, जब विश्व दो ध्रुवों में बंटा हुआ था, तब सोवियत संघ ने भारत को महत्वपूर्ण सहयोगी बनकर साथ दिया। चाहे 1971 के युद्ध का समय हो या औद्योगिक विकास की शुरुआत, सोवियत समर्थन ने भारत की आत्मनिर्भरता को मजबूती दी। यही कारण है कि दोनों देशों के चलते भुगतान तंत्र, आपूर्ति श्रृंखला और अंतरराष्ट्रीय दबाव जैसे मुद्दे सामने आए हैं।

आज के दौर में भी, रक्षा, ऊर्जा और तकनीक के क्षेत्रों में भारत-रूस सहयोग बेहद अहम है। भारत की रक्षा प्रणाली में रूस की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, वहीं ऊर्जा क्षेत्र में भी रूस एक विश्वसनीय भागीदार बना हुआ है। वैश्विक तनावों और पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच भी भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देते हुए रूस के साथ संतुलित संबंध बनाए रखे हैं।

हालांकि, बदलते वैश्विक राजनीति में नई चुनौतियां भी सामने हैं। अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ भारत के बढ़ते संबंध, और रूस का चीन के साथ समीकरण, इस मित्रता के लिए नई जटिलताएं पैदा कर रहे हैं। इसके बावजूद, भारत की विदेश नीति 'रणनीतिक स्वायत्तता' पर आधारित है, जो उसे सभी प्रमुख शक्तियों के साथ संतुलन बनाने में सक्षम बनाती है।

वर्तमान समय में भारत-रूस संबंधों को नई दिशा देने की आवश्यकता है। केवल रक्षा तक सीमित न रहकर, व्यापार, निवेश, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भी सहयोग बढ़ाना होगा। इससे यह मित्रता और अधिक व्यापक और टिकाऊ बन सकेगी।

भारत-रूस मित्रता केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं का भी आधार है। यह संबंध समय की हर परीक्षा में खरा उतरता है और आने वाले वर्षों में भी वैश्विक स्थिरता और संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। (युवराज फौजदार)

जिंदगी की लेखा-जोखा में असली मुनाफा कहाँ है?

पूरा साल हम और आप अंकों के जाल में उलझे रहे। बिक्री, बखुली, देनदार, लेनदार, कर और लाभ-हानि के हिसाब में कहीं न कहीं लागू होती है। इसलिए क्यों न आज थोड़ी देर के लिए दफ्तर की फाइलों से बाहर निकलकर, जीवन की अपनी बही-खाता पर भी नजर डाल ली जाए।

हमने वर्षों से सीखा है कि संपत्ति वह होती है जो हमें समृद्ध बनाए, और देनदारी वह जो हमें बौद्धिक करे। लेकिन जिंदगी की किताब में ये परिभाषाएँ थोड़ी अलग हैं। यहाँ सबसे बड़ी संपत्ति वह नहीं जोतिजोरी में बंद है, बल्कि वह है जो दिल में बसी है। परिवार, सच्चे मित्र और अच्छा स्वास्थ्य—ये ये स्थायी धरोहरें हैं जिन पर कभी क्षरण नहीं लगता। "सोना चांदी धटे-बढ़े, पर अपनापन सदा बड़े"—यही जीवन का असली सिद्धांत है। इनकी कीमत समय के साथ घटती नहीं, बल्कि और अधिक मूल्यवान होती जाती है।

इसी तरह जीवन की चल संपत्तियाँ भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। सुबह की कड़क चाय, सप्ताहांत की छोटी-सी छुट्टी, और बिना कारण मिल जाने वाली मुस्कान—ये छोटी-छोटी खुशियाँ ही जीवन की बड़ी पूंजी बनती हैं। "बूँद-बूँद से घड़ा भरता है"—यह कहावत यहाँ सटीक बैठती है। हर दिन की छोटी खुशी, जीवन के बड़े संतोष का आधार बनती है।

परंतु सबसे कीमती अमूर्त संपत्ति है मन की शांति। आज के समय में यह सबसे दुर्लभ हो गई है। भागदौड़ की इस दुनिया में हर कोई इसे पाने के लिए प्रयासरत है, पर बहुत कम लोग इसे संभाल पाते हैं। "मन चंगा तो कठौती में गंगा"—यदि मन शांत है, तो हर परिस्थिति सुखद प्रतीत होती है।

अब यदि देनदारियों की बात करें, तो जीवन में भी कुछ ऐसे बोझ हैं जिन्हें जितना जल्दी उतार दिया जाए, उतना ही बेहतर है। लंबे समय से मन में बैठा हुआ क्रोध, हर बात पर अधिक सोचने की आदत और अनावश्यक तनाव—ये ऐसी देनदारियाँ हैं जो धीरे-धीरे हमारी ऊर्जा को समाप्त कर देती हैं। "चिंता चिंता समाप्त"—यह केवल कहावत नहीं, बल्कि एक सच्चाई है। जैसे हम अक्सर नजर अंदाज कर देते हैं।

दैनिक जीवन की छोटी-छोटी देनदारियाँ भी कम हानिकारक नहीं होती। "लोग क्या कहेंगे" का भय, रिश्तेदारों के ताने और सप्ताह की शुरुआत का भारीपन—ये सब हमारे मनोबल को कम करते हैं। "निन्दक निधरे राखिए"—कहा तो गया है, पर हर ताने को दिल पर लेना भी समझदारी नहीं। (विवेक यही कहाता है कि जो आवश्यक है, उसे ही महत्व दें।)

और फिर कुछ ऐसी अनिश्चित देनदारियाँ भी हैं, जिनका कोई निश्चित समय नहीं होता। घर-परिवार में संबंधों की संवेदनशीलता, पति-पत्नी के बीच भावनाओं का उत्तार-चढ़ाव—ये जीवन का हिस्सा हैं। "जहाँ प्यार है, वहाँ तकरार भी है"—इस सच्चाई को स्वीकार करना ही संतुलन बनाए रखने का पहला कदम है।

यदि जीवन के लाभ-हानि खाते को देखें, तो आय और व्यय की परिभाषा भी बदल जाती है। यहाँ आय वह है जो हमें भीतर से समृद्ध करे—अमरी मुस्कान, हँसी-मजाक और अपनों के साथ बिताए गए अनमोल क्षण। वहीं व्यय वह है जो हमारी ऊर्जा को व्यर्थ करे—ईर्ष्या, अनावश्यक विवाद और नकारात्मक लोगों पर खर्च किया गया समय। "जैसा बोओगे, वैसा काटोगे"—यदि हम सकारात्मकता बोएंगे, तो परिणाम भी सुखद ही होगा।

अंततः, जीवन का वास्तविक लाभ वह है जो रात को बिस्तर पर जाते समय हमें सूकून की नींद के रूप में मिलता है। यदि दिन भर के बाद मन शांत है, तो समझिए कि आपने सही मायनों में लाभ कमाया है। "संतोषी सदा सुखी"—यह जीवन का अंतिम निष्कर्ष है।

इस पूरी लेखा-प्रणाली का सबसे बड़ा परीक्षक कोई मनुष्य नहीं, बल्कि वह अदृश्य शक्ति है जिसे हम ईश्वर कहते हैं। वही हमारे हर कर्म का मूल्यांकन करता है। इसलिए आवश्यक है कि हमारा खुशी का खाता हमेशा अधिशेष में रहे और पछतावे का खाता शून्य पर। नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत में यही संकल्प लेना चाहिए कि हम केवल धन का नहीं, बल्कि जीवन का भी सही प्रबंधन करें। "समय रहते संभल जाए, वही सच्चा बुद्धिमान"—इस सीख को अपनाते हुए यदि हम आगे बढ़ें, तो निश्चित ही आने वाला वर्ष अधिक संतुलित और सुखद होगा।

मुस्कुराते रहिए, क्योंकि यही वह पूंजी है जो बांटने से बढ़ती है और जीवन को वास्तव में समृद्ध बनाती है।

—अमर कुमार बिसी

अमृतसर, 1 अप्रैल (साहिल बेरी) वार्ड नंबर 12 में लगाए गए एक विशेष कैम्प के दौरान आम आदमी पार्टी के संस्थापक सदस्य एवं वरिष्ठ नेता तथा एक्स स्टेट ऑब्जर्वर इंजीनियर राकेश कुमार शर्मा ने नई चुनौतियां भी सामने हैं। अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ भारत के बढ़ते संबंध, और रूस का चीन के साथ समीकरण, इस मित्रता के लिए नई जटिलताएं पैदा कर रहे हैं। इसके बावजूद, भारत की विदेश नीति 'रणनीतिक स्वायत्तता' पर आधारित है, जो उसे सभी प्रमुख शक्तियों के साथ संतुलन बनाने में सक्षम बनाती है।

प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मान सरकार द्वारा शुरू की गई यह योजना लोगों को धार्मिक स्थलों के दर्शन के लिए एक सुविधाजनक अवसर प्रदान करती है और इसका अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। इंजीनियर राकेश शर्मा ने लोगों से अपील की कि वे समय पर अपना आरक्षण करवाएं और अन्य लोगों को भी इस योजना के बारे में जानकारी दें। इस दौरान मैडम मोनिका त्यागी, ब्लॉक ईंचार्ज हलका नॉर्थ में विंग भी मौजूद थीं। उन्होंने भी लोगों को योजना से जुड़ने और सरकार की जगह तैयारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। कैम्प के दौरान बड़ी संख्या में क्षेत्र के लोगों ने भाग लिया और योजना के बारे में जानकारी प्राप्त की।

आम आदमी पार्टी के संस्थापक सदस्य एवं वरिष्ठ नेता, एक्स स्टेट ऑब्जर्वर इंजीनियर राकेश कुमार शर्मा ने वार्ड नंबर 12 में विशेष कैम्प के दौरान पंजाब सरकार की तीर्थ यात्रा योजना के प्रति लोगों को किया जागरूक



अमृतसर, 1 अप्रैल (साहिल बेरी)

वार्ड नंबर 12 में लगाए गए एक विशेष कैम्प के दौरान आम आदमी पार्टी के संस्थापक सदस्य एवं वरिष्ठ नेता तथा एक्स स्टेट ऑब्जर्वर इंजीनियर राकेश कुमार शर्मा ने लोगों को पंजाब सरकार की तीर्थ यात्रा योजना के बारे में जागरूक किया। इस अवसर पर उन्होंने क्षेत्रवासियों को योजना के लाभों और आरक्षण

प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मान सरकार द्वारा शुरू की गई यह योजना लोगों को धार्मिक स्थलों के दर्शन के लिए एक सुविधाजनक अवसर प्रदान करती है और इसका अधिक से अधिक लाभ उठाना चाहिए। इंजीनियर राकेश शर्मा ने लोगों से अपील की कि वे समय पर अपना आरक्षण करवाएं और अन्य लोगों को

भी इस योजना के बारे में जानकारी दें। इस दौरान मैडम मोनिका त्यागी, ब्लॉक ईंचार्ज हलका नॉर्थ में विंग भी मौजूद थीं। उन्होंने भी लोगों को योजना से जुड़ने और सरकार की जगह तैयारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। कैम्प के दौरान बड़ी संख्या में क्षेत्र के लोगों ने भाग लिया और योजना के बारे में जानकारी प्राप्त की।

जनता पार्टी के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में जन जागृति यात्रा एवं रोड शो आयोजित किया जाएगा

अमृतसर 1 अप्रैल (साहिल बेरी)

जनता पार्टी के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में भाजपा ट्रेड यूनिवर्सन सैल पंजाब द्वारा 5 अप्रैल, रविवार को जन जागृति यात्रा एवं रोड शो आयोजित किया जाएगा। इस संबंध में ट्रेड यूनिवर्सन सैल पंजाब के प्रांतीय कन्वीनर अश्विनी शर्मा की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें कार्यक्रम की तैयारियों की समीक्षा की गई। पत्रकारों से बातचीत करते हुए अश्विनी शर्मा ने बताया कि पार्टी का स्थापना दिवस प्रतिवर्ष 6 अप्रैल को मनाया जाता है। इसी कड़ी में भाजपा की विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से 5 अप्रैल को लोक जागृति यात्रा निकाली जा रही है। उन्होंने जानकारी दी कि यह यात्रा दोपहर 3:00 बजे छेहराटा गेट से आरंभ होकर ग्वाल मंडी चौक में संपन्न होगी।



उन्होंने आगे बताया कि इस अवसर पर केंद्रीय रेल मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू, पंजाब भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सुनील जाखड़ मंत्री राज्य कार्यकर्ता अध्यक्ष अश्विनी शर्मा विशेष रूप से उपस्थित होकर कार्यक्रमों को संबोधित करेंगे। बैठक में पूर्व पार्षद अरविंद शर्मा, मंडल प्रधान छेहराटा सतीश पुंज, गोंगिंदर सिंह अटवाल, रमन पंडित, मोती धमका, रवि पहलवान सहित अन्य कार्यकर्ता भी मौजूद रहे।

'बीजू बाबू हमेशा एक महान राजनेता रहे हैं और रहेंगे, सांसद निशिकांत दुबे ने बिना शर्त माफी मांगी

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओडिशा

भुवनेश्वर: बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने मशहूर बीजू पटनायक को लेकर एक विवादित बयान दिया था। जिसकी ओडिशा से लेकर दिल्ली तक निंदा हुई। बीजू बाबू के अपमान पर राज्य विधानसभा में हंगामा हुआ। BJD, कांग्रेस, CPI(M) ने एक साथ विरोध किया। उन्होंने ईशानिदा प्रस्ताव लाने की मांग की। विवादित बयान देने के बाद अब B.J.P MP निशिकांत दुबे ने बिना शर्त माफी मांग ली है। उन्होंने सोशल मीडिया X पर माफी मांगी। सोशल मीडिया X पर निशिकांत दुबे ने लिखा, "पिछले हफ्ते मीडिया से बात करते हुए मैंने नेहरू-गांधी परिवार के बारे में बात की थी। भारत के जाने-माने नेताओं में से एक आदरणीय पूर्व मुख्यमंत्री बीजू पटनायक भी मौजूद थे। लेकिन मेरी बातों का गलत मतलब निकाला गया। मेरी बातों का गलत मतलब निकाला गया। सबसे पहले, यह बयान निजी है। नेहरू के बारे में मेरी राय का गलत मतलब निकाला गया। बीजू बाबू हमारे लिए हमेशा एक महान राजनेता थे और हमेशा रहेंगे। अगर मेरे बयान से किसी की भावनाओं को ठेंसा पहुंचे है, तो मैं बिना शर्त माफी मांगता हूँ।

भुवनेश्वर: बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने मशहूर बीजू पटनायक को लेकर एक विवादित बयान दिया था। जिसकी ओडिशा से लेकर दिल्ली तक निंदा हुई। बीजू बाबू के अपमान पर राज्य विधानसभा में हंगामा हुआ। BJD, कांग्रेस, CPI(M) ने एक साथ विरोध किया। उन्होंने ईशानिदा प्रस्ताव लाने की मांग की। विवादित बयान देने के बाद अब B.J.P MP निशिकांत दुबे ने बिना शर्त माफी मांग ली है। उन्होंने सोशल मीडिया X पर माफी मांगी। सोशल मीडिया X पर निशिकांत दुबे ने लिखा, "पिछले हफ्ते मीडिया से बात करते हुए मैंने नेहरू-गांधी परिवार के बारे में बात की थी। भारत के जाने-माने नेताओं में से एक आदरणीय पूर्व मुख्यमंत्री बीजू पटनायक भी मौजूद थे। लेकिन मेरी बातों का गलत मतलब निकाला गया। मेरी बातों का गलत मतलब निकाला गया। सबसे पहले, यह बयान निजी है। नेहरू के बारे में मेरी राय का गलत मतलब निकाला गया। बीजू बाबू हमारे लिए हमेशा एक महान राजनेता थे और हमेशा रहेंगे। अगर मेरे बयान से किसी की भावनाओं को ठेंसा पहुंचे है, तो मैं बिना शर्त माफी मांगता हूँ।

